दिसम्बर–२०२५ ◆ वर्ष १५ ◆ अंक ०८ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

दिसम्बर–२०२५

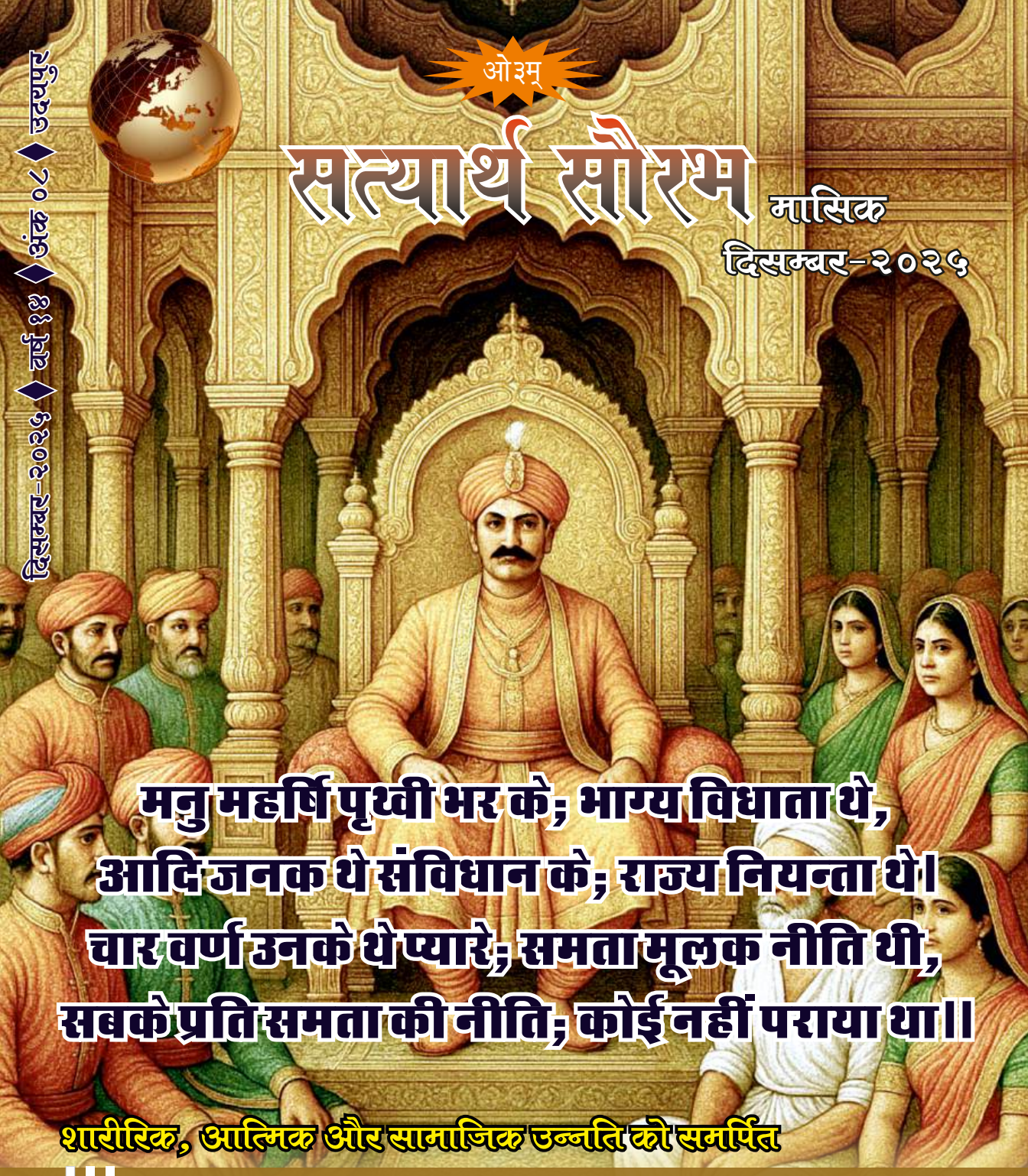

मनु महर्षि पृथ्वी भर के; भाग्य विधाता थे,
आदि जनक थे संविधान के; राज्य नियन्ता थे।
चार वर्ण उनके थे प्यारे; समता मूलक नीति थी,
सबके प्रति समता की नीति; कोई नहीं पराया था।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१५ १७०

सफलता के 6 मूल मंत्र

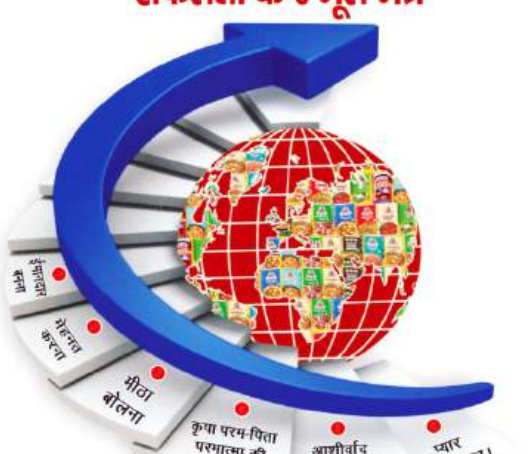

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच-सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1250
आजीवन	- 1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	- 600 रु.	$ 125
वार्षिक	- 150 रु.	$ 30
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३१२५ पौष कृष्ण तृतीया विक्रम संवत् २०८२ दयानन्दाब्द २०१

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

December- 2025

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

समाचार २१

हलचल ३०

०४ नवीन प्रकल्प का भव्य लोकार्पण

०५ वेद सुधा

१५ विनम्र श्रद्धांजलि

१७ हर शाख पे 'उल्लू' बैठा है

१९ सत्यार्थ मित्र बने

२० आर्य समाज में 'अधकचरों को पदासीन न करें'

२२ स्वामी दयानन्द के साथ महिलाओं का पत्राचार

२५ स्वास्थ्य- जीवन का प्रथम धर्म

२७ कथा सरित- कहानी दयानन्द की

स्वामी — श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १४ अंक -०८

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

महाशय राजीव गुलाटी जी की आर्य जगत को
अनुपम भेंट
SILICON MUSEUM OF INDIA
गाथा अमर बलिदानियों की
राष्ट्र मन्दिर
भव्य लोकार्पण 22 फरवरी 2026
महर्षि कृत ग्रंथों का इतिहास
महर्षि जीवन यात्रा
वेद वृक्ष
महर्षि शयन कक्ष
अथर्ववेद
सामवेद
नवलखा महल सांस्कृतिक केंद्र
गुलाब बाग उदयपुर
8008508485, 9314235101
Save these numbers
for all information

ओ३म्

वेद सुधा

भगवान् सबका भेद जानते हैं

यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतङ्कम्।
द्वौ संनिषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद्वेद वरुणस्तृतीयः।। - अथर्व ४/१६/२

शब्दार्थ– **यः तिष्ठति**= जो खड़ा है, **चरति**= (जो) चलता है, या संशय करता है, **च यः वंचति**= जो कुटिल चाल चलता है, ठगता है, **यः निलायं चरति**= जो छिप-छिपकर चलता है, (षड्यन्त्र आदि करता है), **यः प्रतंकम् (चरति)**= जो भय का संचार करता है। **यत् द्वौ**= (और) जो दो मनुष्य, **सं निषद्य**= एक साथ बैठकर, **मन्त्रयेते**= गुप्त विचार, मन्त्रणा करते हैं। **राजा**= सर्वप्रकाशक, **वरुणः**= सर्वश्रेष्ठ अन्तर्यामी प्रभु **तृतीयः**= (उनमें) तीसरा (होकर), **तत् वेद**= उसको जानता है।

व्याख्या

इस मन्त्र का उद्देश्य, भगवान् की सर्वव्यापकता और सर्वज्ञता बतलाकर पाप से दूर रखना है।

मनुष्य कहीं निर्जन वन में खड़ा है, समझता है, यहाँ कोई नहीं देखता। यह उसकी भूल है, क्योंकि-

राजा तद्वेद वरुणः- सर्वप्रकाशक, सर्वान्तर्यामी वरुण उसे जानता है। सर्वप्रकाशक वही हो सकता है, जो स्वयं प्रकाशक भी हो। हे भोले मनुष्य! तू अकेला नहीं है, भगवान् भी तेरे साथ है। तुझे वह दिखाई नहीं दे रहा, वह तेरे अन्दर है। तेरे आत्मा के अन्दर है। जो कुछ तू अकेला सोचता है, वह-

तद्वेद= उसे जानता है। तू उससे छिप नहीं सकता।

किसी को संशय होता है, प्रभु उसको भी जानते हैं।

कोई धूर्त किसी सरल चित्त को एकान्त में ले जाकर उसे ठगने की चेष्टा करता है और समझता है- 'मेरी इस ठगी को कोई नहीं जान रहा?' वेद कहता है-

राजा तद्वेद वरुणः- 'अन्तर्यामी भगवान् इस बात को जानते हैं।'

कोई छिपकर टेढ़ी चाल चलता है और समझता है, मैं यह कार्य छिपकर कर रहा हूँ । वेद उसे चेतावनी देता है-

राजा तद्वेद वरुणः- 'हे कुटिल! अन्तर्यामी इस बात को जानता है।'

कई लोग दूसरों पर अपना रोब गाँठते हैं, दूसरों पर आतंक दिखाते हैं, उन्हें डराते हैं, वेद कहता है- हे डरानेवाले ! तू स्वयं डर, भय कर, क्योंकि तेरी इस लीला को-

वेद वरुणः- 'अन्तर्यामी प्रभु जानता है।'

दो मनुष्य एकान्त में जाकर गुप्त मन्त्रणा करते हैं और पूरी सतर्कता वर्तते हैं कि उन्हें कोई न देख पाये, परन्तु वे भोले या चालाक नहीं जानते कि-

राजा तद्वेद वरुणस्तृतीयः- 'सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी भगवान् उन दो में तीसरा होकर सब-कुछ जान रहा है।'

वेद यह कहता है कि परमात्मा सबके अन्दर-बाहर है, अतः वह सबका भेद जानता है । यजुर्वेद (४०/४) में

कहा है-

तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः।

'वह भगवान् इस सारे जगत् के अन्दर है और वही इसके बाहर भी है।'

भगवान् को यहाँ राजा कहा गया है। राजा का एक अर्थ 'राज्य करनेवाला' भी होता है, अर्थात् मनुष्य पाप करके सांसारिक राजा के दण्ड से भले ही बच जाए, किन्तु वरुण राजा के दण्ड से नहीं बच सकता, क्योंकि वह सर्वज्ञ है। कोई कहीं भाग जाए, उसके पाश से नहीं बच सकता। वेद में कहा है-

उत यो द्यामति सर्पात्परस्तान्न स मुच्यातै वरुणस्य राज्ञः॥ - अथर्ववेद ४/१६/४

'चाहे वह (पापकर्त्ता) द्यौ से भी परे चला जाए, किन्तु राजा वरुण से नहीं बच सकता।' क्योंकि-

सर्वं तद्राजा वरुणो विचष्टे यदन्तरा रोदसी यत्परस्तात्।
संख्याता अस्य निमिषो जनानाम्॥ -अथर्ववेद ४/१६/५

'जो दोनों लोकों में है और उससे परे भी है, उस सबको राजा वरुण जानता है। इसने तो लोगों की आँखों के निमेष तक गिन रखे हैं।'

अर्थात् अत्यन्त दूर और अत्यन्त सूक्ष्म सभी उसके ज्ञान के अन्दर है। इसलिए मानव! सँभल! पाप को छोड़! पाप का दण्ड अवश्य मिलेगा। तू अज्ञ, अल्पज्ञ प्राणी को भले ठग ले, किन्तु उस सर्वज्ञ को नहीं ठग सकता।

कहीं कोई भूल से यह न मान बैठे कि भले ही भगवान् सर्वत्र व्यापक और सर्वद्रष्टा हो, किसी के देखते रहने के कारण हम अपना अभिलषित कर्म नहीं छोड़ने के। हमें लज्जा-शंका कुछ नहीं है। मानो उसको सावधान करने के लिए ही व्याख्येय मन्त्र से पूर्व मन्त्र में कहा है-

बृहन्नेषामधिष्ठाता अन्तिकादिव पश्यति।

'इस सबका महान् अधिष्ठाता इनके सारे कार्यों को दूर तथा समीप से देख रहा है।'

अर्थात् भगवान् सर्वज्ञ (सर्वसाक्षी) ही नहीं है, वरन् वह अधिष्ठात भी है। पाप-पुण्य, भले-बुरे कर्मों के फलों का व्यवस्थाता भी है। बुरा कर्म करके कोई उसकी दण्ड-व्यवस्था से बच नहीं सकता।

भगवान् की सर्वज्ञता तथा अन्तर्यामिता को बतलाने के लिए वेद में वरुण शब्द का प्रयोग हुआ करता है। जैसे संध्यागत मनसापरिक्रमा मन्त्रों में **'प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः'** कहा गया है। प्रतीची= उलटी, पीठ पीछे की दिशा का स्वामी वरुण है, अर्थात् मानव-इन्द्रियों और बुद्धियों से अगम्य पदार्थों का भी भगवान् ज्ञाता तथा नियन्ता है, इसीलिए उसे अघमर्षण मन्त्रों में **'मिषतो वशी'** चेष्टावालों का वशकारी कहा गया है। प्रार्थनामन्त्र में भी **'यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव'** (जो प्राणी तथा अप्राणी जगत् का एकमात्र राजा है, नियन्ता है) द्वारा यही भाव कहा गया है। **'ईशावास्यमिदं सर्वम्'** यह सर्व चर और अचर जगत् ईश्वर से अन्दर-बाहर व्याप्त है। नियन्ता होने के लिए ज्ञाता होना आवश्यक है। जो सर्वनियन्ता है, वह सर्वज्ञाता भी होता है। तभी तो भगवान् को **'विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्'** - यजुर्वेद ४०/१६ सब विचारों एवं आचारों को जाननेवाला कहा है।

प्रभु की सर्वज्ञता और सर्वव्यापकता का विश्वास मनुष्य को पाप-पाशों से बचाता है। इसलिए उससे प्रार्थना है- **युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनः** (यजुर्वेद ४०/१६) 'हमसे कुटिल पाप को दूर कर।'

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- स्वामी वेदानन्द तीर्थ
सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
साभार- स्वाध्याय-सन्दीप

❑❑❑

आत्म निवेदन

मनु का धर्मशास्त्र

मानवता का प्रथम संविधान समझी जाने वाली मनुस्मृति को भारतीय आचार्य परम्परा में सर्वोपरि स्थान प्राप्त है। जीवन के समस्त पक्षों को स्पर्श करने तथा राजधर्म और प्रजा धर्म की विस्तृत व्याख्या करने वाला आदर्श विधान मनुस्मृति है। महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में मनु के विधान को सर्वोपरि स्थान दिया है। परन्तु आजकल मनुस्मृति को लेकर राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु साशय भ्रम फैलाया जाता है, इसकी निन्दा की जाती है यहाँ तक कि इसको जलाया भी जाता है। मनु पर स्त्री विरोधी तथा दलित विरोधी होने के आरोप लगाए जाते हैं। मनु का विरोध करने वाले हमारे दृष्टिकोण में दो प्रकार के लोग हैं। प्रथम वे जिनका मनु को लेकर कोई पूर्वाग्रह नहीं है वे सच्चाई जानना चाहते हैं। परन्तु उन्हें जब 'मनु' में परस्पर विरोधी प्रावधान मिलते हैं तो वे चकरा जाते हैं। इन लोगों का कथन है कि ग्रन्थ में ऐसे श्लोक भी हैं जिन्हें आज के मानकों से स्पष्ट रूप से जाति-आधारित विषमता और स्त्री-स्वायत्तता पर पाबंदी के रूप में पढ़ा जाता है, और ऐसे भी श्लोक हैं जो स्त्रियों के सम्मान व अधिकार (जैसे स्त्रीधन) पर जोर देते हैं और ऐसे श्लोक भी हैं जो रज-वीर्य के योग अर्थात् जन्म से जाति का निर्धारण नहीं मानते। मनुस्मृति वर्ण व्यवस्था की पोषक है जो आजकल की जाती व्यवस्था से पूर्णतः पृथक् है। साथ-साथ, पाण्डुलिपियों का भेद, आचार्य-टीका परम्परा भेद भी पाया जाता है। **इन आधारों पर वे मनुस्मृति में प्रक्षिप्त श्लोकों की विद्यमानता स्वीकार करते हैं।** दूसरा वर्ग उन लोगों का है जो या तो सत्य जानने का प्रयत्न ही नहीं करते अथवा यह जानते हुए भी कि ऐसे श्लोक जिनके आधार पर मनुस्मृति पर आरोप लगाए जाते हैं अत्यन्त न्यून हैं, साशय स्वार्थवश मनु का विरोध करते हैं। मनुस्मृति में पाए जाने जिन श्लोकों पर विशेष आरोप लगाया जाता है देखें-

स्त्री-स्वायत्तता पर पाबन्दी (उदाहरण):

बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत्पाणिग्राहस्य यौवने।
पुत्राणां भर्तरि प्रेते न भजेत्स्त्री स्वतन्त्रताम्॥ (मनु. ५/१४८)

'बाल्यावस्था में पिता के अधीन, युवावस्था में पति के अधीन, और पति के निधन पर पुत्र के अधीन; स्त्री को

कभी स्वतन्त्र नहीं होना चाहिए।' यह श्लोक पितृसत्ता का समर्थक माना जाता है। परन्तु यहीं पचासों उदाहरण हैं जहाँ मनुस्मृति में स्त्री को अत्यन्त सम्माननीय स्थान दिया है।

स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलम्।
तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते।। - मनु. ३/६२

स्त्री की प्रसन्नता में सब कुल प्रसन्न होता और उसकी अप्रसन्नता में सब अप्रसन्न अर्थात् दुःखदायक हो जाता है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः।। - मनु. ३/५६

अर्थात् जिस कुल में नारियों की पूजा अर्थात् सत्कार होता है, उस कुल में दिव्य गुण, दिव्य भोग और उत्तम सन्तान होते हैं और जिस कुल में स्त्रियों की पूजा नहीं होती, वहाँ जानों उनकी सब क्रिया निष्फल हैं। (सं. वि.)

अब इन विपरीतार्थ श्लोकों की उपस्थिति में यद्यपि अनेक कसौटियाँ हैं, जिनके आधार पर प्रक्षिप्त को चिह्नित किया जा सकता है पर उसके लिए पूर्वाग्रह से रहित होना आवश्यक है। फिर भी जो प्राकृतिक न्याय के अनुकूल तथा नैतिक मापदण्डों पर खरा उतरता है उसे स्वीकार कर लेना अभीष्ट होगा। गाँधीजी ने 'हरिजन' पत्र (१९३०-४० के दशक) में लिखा था कि- 'मनुस्मृति में बहुत-सी बातें ऐसी हैं जिन्हें मनु ने नहीं कहा होगा। उसमें बाद में मिलावट की गई है। 'गाँधीजी ने यह भी कहा कि यदि किसी शास्त्र में अन्यायपूर्ण बातें हैं, तो हमें उन्हें त्याग देना चाहिए और केवल वे बातें ग्रहण करनी चाहिए जो न्याय, करुणा और समानता पर आधारित हों।

मनु पर जन्म पर आधारित व्यवस्था के अन्तर्गत शूद्र को अत्यन्त हिकारत से देखने का आरोप लगाया जाता है। कहा जाता है कि भगवान मनु ने शूद्रों के प्रति अत्यन्त अमानवीय व्यवस्थाओं का विधान किया है।

उदाहरण के रूप में मनु ८/२८१ में,

सहासनमभिप्रेप्सुरुत्कृष्टस्यापकृष्टजः।
कट्यां कृताङ्को निर्वास्यः स्फिचं वास्यावकर्तयेत्।।

अर्थात् 'यदि किसी 'निम्नजाति' व्यक्ति ने 'उच्च' के साथ एक ही आसन पर बैठने की चेष्टा की तो उसे चिह्नित कर निर्वासित करें, या नितम्ब छिन्न कर दें।'

न स्वामिना निसृष्टोऽपि शूद्रो दास्याद्विमुच्यते।
निसर्गजं हि तस्य कस्तस्मात्तदपोहति।। - मनु. ८/४१४

'स्वामी द्वारा मुक्त किए जाने पर भी शूद्र दास्य से मुक्त नहीं होता; क्योंकि वह उसके स्वभावगत (निसर्गतः) है।' इस परम्परा को भी असमानता का आधार कहा गया है।

अब विचार करें कि मनु महाराज तो वर्ण की उत्पत्ति जन्म से मानते ही नहीं और स्पष्ट घोषणा करते हैं कि शूद्र के कुल में जन्म लेने वाला बालक योग्यता प्राप्त कर ब्राह्मण बन सकता है। उन पर उक्त प्रकार के आरोप कैसे लग सकते हैं? इसी प्रकार शूद्र को जघन्य दण्ड देने की बात भी तब निराकृत हो जाती है जब हम मनुस्मृति में ऐसे श्लोक देखते हैं जहाँ समान अपराध में ब्राह्मण को शूद्र की अपेक्षा कई गुणा दण्ड देने का विधान मिलता है।

अष्टापाद्यं तु शूद्रस्य स्तेये भवति किल्बिषम्।
षोडशैव तु वैश्यस्य द्वात्रिंशत्क्षत्रियस्य च॥ - मनु. ८/३३७
ब्राह्मणस्य चतुःषष्टिः पूर्णं वाऽपि शतं भवेत्।
द्विगुणा वा चतुःषष्टिस्तद्दोषगुणविद्धि सः॥ - मनु. ८/३३८

इन श्लोकों की व्यवस्था देखिये। यहाँ शूद्र को जो दण्ड देने को कहा है तो अन्य वर्णों को उससे दुगुना चौगुना और ब्राह्मण को आठ गुणा दण्ड देने की बात कही गयी है। मनु विरोधी इसकी उपेक्षा क्यों करते हैं। यह ठीक इसलिए है कि ब्राह्मण ज्ञान में अधिक है। अपराध करने से विचारपूर्वक विरत् रहने की उसमें क्षमता है। दूसरे उस पर समाज का विश्वास भी अधिक होता है, शूद्र में वहाँ उच्च स्तर का आत्मानुशासन सम्भव नहीं है। अतः समान अपराध में शूद्र को सबसे कम और ब्राह्मण को सबसे अधिक दण्ड का प्रावधान है। इस व्यवस्था के होते इससे विपरीत भाव रखने वाली कोई भी व्यवस्था भगवान् मनु की नहीं हो सकती ऐसा मानना ही ठीक है। **मनु राजा को सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा से हजार गुणा दण्ड देने का प्रावधान करते हैं।**

आज भी भारत में उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालय के निर्णय देखें तो मनु की इस व्यवस्था की आत्मा के दर्शन हमें वहाँ होते हैं। हम केवल दो उदाहरण यहाँ दे रहे हैं। -

मद्रास हाईकोर्ट ने १६ मार्च २०२५ का S. S. Ganapathy vs The Chairman cum Managing Director में निर्णय देते हुए मानो मनुस्मृति के दण्ड विधान की आत्मा को प्रस्तुत किया।

"…. since the petitioner holds a more responsible position, he cannot insist that the same punishment should be imposed against him…. The responsibility which one has to assume would be commensurate with the position held by him in the hierarchy."

अदालत ने सीधे माना कि क्योंकि आवेदक एक अधिक जिम्मेदार पद पर था, इसलिए उसी प्रकार का दण्ड उस पर लागू नहीं हो सकता- अर्थात्, ऊँचे पद पर होने के कारण दण्ड में सख्ती अभीष्ट है।

ऐसा ही एक और निर्णय देखिये- R. Bala krishna Pillai vs- State of Kerala (AIR 2001 SC 1701) यह मामला भ्रष्टाचार का था। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यदि कोई मंत्री या उच्च पद पर बैठा व्यक्ति भ्रष्टाचार करता है तो वह लोक-विश्वास का घोर उल्लंघन है। इसलिए उसकी जिम्मेदारी सामान्य व्यक्ति की तुलना में कहीं अधिक है। निर्णय में यह स्पष्ट है कि ऊँचे पद पर बैठे व्यक्ति का अपराध अधिक गम्भीर माना जाएगा। ऐसे अनेक न्यायिक निर्णय हैं।

अर्थात् जितना ऊँचा पद, उतनी अधिक जिम्मेदारी और यदि उसका दुरुपयोग हुआ तो दण्ड भी उतना ही कठोर होगा। **मनु ने ब्राह्मण को शूद्र आदि से अधिक दण्ड का विधान किया है अतः मनु पर शूद्र के प्रति अन्याय और ब्राह्मण वाद का आरोप लगाने वाले साफ-साफ भ्रमित मात्र हैं।**

हाँ! यहाँ यह मानना ही पड़ेगा कि उक्त श्लोकों को, जिनमें से महिलाओं तथा तथाकथित निम्न जाति वालों के लिए, अन्याय पूर्ण व्यवस्थाएँ दी गयीं हैं, अगर इनके अर्थों को ऐसे ही लिया जाएगा तो मनुस्मृति पर लगाए जा रहे आरोप सही माने जायेंगे। परन्तु स्थिति ऐसी नहीं है। क्योंकि मनु महाराज ने तो स्त्रियों को अत्यन्त सम्मानित स्थान दिया है। स्त्रियों का सम्पति पर अधिकार माना है, विधवा-विवाह का विधान किया है, आदि-आदि। इसी प्रकार वे जन्मगत जाति के नहीं वर्ण व्यवस्था के पोषक हैं जिसकी भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने प्रशंसा की है। फिर मनुस्मृति में दिखने वाले दोषों के कारण क्या हैं? इसका उत्तर आवश्यक है। **और उत्तर है परवर्ती प्रक्षेप, मिलावट।** वेदों को अपवाद मानें तो सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय इन मिलावटियों का शिकार

हुआ है। मनुस्मृति की विभिन्न पाण्डुलिपियों में पाठभेद इस धारणा को सम्पुष्ट करता है। एक ही मनीषी के विधान में परस्पर विरोधी व्यवस्थाएँ कैसे हो सकती हैं? उदहारण हमने ऊपर दे दिए हैं। इन पर मनु विरोधी अवश्य विचार करें।

अब यहाँ उनके Intention की बात आती है, जो मनु में दोष ढूढ़ना चाहते हैं और इसमें अपने स्वार्थ की पूर्ति देखते हैं। वे आरोप वाले श्लोकों को देखते हैं उन्हें ही उद्धृत करते हैं। मनु की उदात्त व्यवस्थाएँ उनके किसी काम की नहीं। **परन्तु निष्पक्ष विद्वानों का मानना है कि निश्चित ही ऐसे आरोप लगाने वाले स्थल परवर्ती मिलावट हैं।** अनेक विदेशी विद्वानों का भी यही मत है। कुछ विद्वानों ने ऐसे ही परस्पर विरोधी कथनों के कारण मनुस्मृति को एक लेखक अर्थात् मनु की रचना न मानकर अनेक लेखकों की रचना जो भिन्न-भिन्न कालखण्ड में जुड़ती गयीं, माना है। उदाहरण-

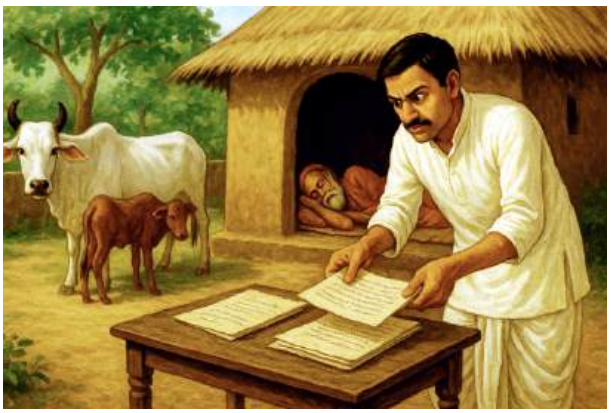

1. स्वामी दयानन्द सरस्वती

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थों, विशेष रूप से सत्यार्थ प्रकाश में मनुस्मृति के श्लोकों को बहुतायत में उद्धृत किया है। परन्तु **वे मनुस्मृति में प्रक्षेप को स्वीकार करते हैं** अतः विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम में **प्रक्षेप रहित मनुस्मृति** को प्रामाणिक मानते हुए स्वीकार करते हैं। पूना प्रवचनों में दिए गए उनके कथन पर ध्यान देना चाहिए।

'मनु जी का धर्मशास्त्र कौन सी स्थिति में है इसका विचार करना चाहिए। जैसे कुछ लोग दूध में पानी डालकर उस दूध को बढ़ाते हैं और मोल लेने वालों को ठगते हैं। इस प्रकार मानव धर्मशास्त्र की अव्यस्था हुई है **उसमें बहुत से दुष्ट क्षेपक श्लोक हैं वे वस्तुतः भगवान मनु के नहीं हैं।**

2. महात्मा गाँधी

उद्धरणः "There are so many meaningless and self contradictory verses in Manusmriti. **The verses which degrade women cannot be the words of Manu. These are later additions."** संदर्भ- CWMG Vol. 25, P. 220

3. डॉ. भीमराव अम्बेडकर

यूँ डॉ. अम्बेडकर ने मनुस्मृति की तीव्र आलोचना की है परन्तु परवर्ती मिलावट को भी वे स्वीकार करते हैं।

"The code of Manu grew by accretions. The rigidity of caste and the harsh rules against women are clearly later interpolations."

(Dr. B.R. Ambedkar- Writings and Speeches, Vol-3, Education Dept., Govt. of Maharashtra, P. 62–65)

अम्बेडकर जी ने जाति-आधारित कठोर नियमों और स्त्रियों के प्रति अपमानजनक श्लोकों को प्रक्षिप्त (Interpolated) माना। **काश वे इन मिलावटी अंशों को निकाल कर फैंक देते और बाकी उदात्त व तर्काधारित भावों से संपृक्त मनुस्मृति को स्वीकार कर लेते तो आज स्थिति भिन्न होती।**

4. जॉर्ज ब्यूहलर (German Indologist)

"Verses derogatory to Sudras and women show linguistic and metrical peculiarities, which mark them as interpolations." (SBE, Vol. 25, Introduction, P. xxxiv–xxxvi)

विशेष- ब्यूहलर ने प्रक्षेपों की जाँच का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साहित्यिक साधन अपनाया। **भाषा और छन्द**

की असंगति से ब्यूहलर ने कहा कि स्त्री-निन्दा और शूद्र-विरोधी श्लोक मूल ग्रन्थ का अंग नहीं।

5. पैट्रिक ओलिवेल (American Scholar, Oxford University Press)

ग्रन्थ- Manu's Code of Laws A Critical Edition and Translation of the Manava & Dharmashastra) OUP, 2005)

उद्धरण- "The most severe restrictions on women and the rigid birth based caste rules are not part of the oldest stratum but belong to later redactions." ऐसे श्लोकों को उन्होंने बाद का जोड़ा हुआ अंश कहा।

मनुस्मृति के प्रशंसक भारतीय एवं वेदेशी विद्वान्

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तो प्रक्षेप रहित मुनुस्मृति को सर्वोच्च समादृत किया है।

गाँधी जी

गाँधीजी ने मनुस्मृति को पूर्णतः अस्वीकार नहीं किया, बल्कि 'छानकर स्वीकार' करने की नीति अपनाई। वे कहते थे, जो श्लोक सत्य, अहिंसा, करुणा और धर्म से मेल खाते हैं, वे मनु के वास्तविक विचार हैं। जो श्लोक असमानता, अस्पृश्यता और स्त्री-विरोध को बढ़ावा देते हैं, वे मनु की वाणी नहीं बल्कि बाद के प्रक्षेप कर्त्ताओं की जोड़ हैं।

2. Louis Jacolliot **(फ्रांस, न्यायाधीश और विद्वान,** 1876)

'मनु मूसा से भी महान् हैं। मनुस्मृति के नियमों में हिब्रू (यहूदी) कानून की तुलना में अधिक ऊँचा भाव और श्रेष्ठ ज्ञान झलकता है।'

3. Max Muller **(जर्मनी, संस्कृतविद्, 19 वीं सदी)**

History of Ancient Sanskrit Literature

'मनुस्मृति मानव जाति के सबसे महत्वपूर्ण और प्राचीन दस्तावेजों में से एक है।'

4. Monier Williams **(इंग्लैंड, संस्कृत विद्वान्, 1875)**

Indian Wisdom 'मनु का विधान हिन्दू कानून का प्रमुख स्रोत है, यह हिन्दू समाज की सामाजिक और नैतिक चेतना का मूर्त रूप है।'

5. Alain Danielou **(फ्रांस, इंडोलॉजिस्ट, 1987)**

While the Gods Play

'मनुस्मृति समाज की उस दृष्टि को प्रस्तुत करती है जो ऋत् (ब्रह्माण्डीय व्यवस्था) पर आधारित है, जहाँ प्रत्येक प्राणी का अपना स्थान और कर्तव्य है।'

इस प्रकार, कई देशी और विदेशी विद्वानों ने मनुस्मृति को बाइबिल से श्रेष्ठ, मूसा से बड़ा, मानव इतिहास का प्राचीनतम दस्तावेज और जीवन-सकारात्मक एवं समाजव्यवस्था का आदर्श माना है।

Nietzsche ने The Antichrist (अध्याय ५६) में सीधे-सीधे Manu Smriti (Law of Manu) का उल्लेख किया है। उन्होंने बाइबिल से तुलना करते हुए लिखाः

'मनुस्मृति बाइबिल की तुलना में कहीं अधिक बुद्धिसम्पन्न और श्रेष्ठ कृति है। इसमें जीवन की पुष्टि है, आत्मविश्वास और जीवन का विजयी भाव है।'

अब हम उस वर्त्तमान प्रसंग की चर्चा करते हैं जिस कारण यह आलेख लिखा है। कुछ मास पूर्व दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति योगेश सिंह का एक निर्देश जिसमें कहा गया- (१२ जून २०२५, प्रेस वार्ता) 'दिल्ली विश्वविद्यालय में मनुस्मृति किसी भी रूप में नहीं पढ़ाई जाएगी। धर्मशास्त्र स्टडीज (Dharamashastra Studies) नामक कोर्स पूरी तरह से हटा दिया गया है।' उन्होंने यह भी कहा कि जिसने भी यह कोर्स प्रस्तावित

किया था, वह विश्वविद्यालय की प्रशासनिक अनुमति के बिना हुआ था। स्रोत- The Indian Express

अगस्त २०२५ में एक प्रशासनिक आदेश में DU ने सभी कॉलेजों को आधिकारिक सिलेबस का कड़ाई से पालन करने का लिखित आदेश जारी किया। इसमें कहा गया- "No department & college shall introduce or teach any reading material not approved by Academic Council & Executive Council. **Manusmriti stands deleted."**

यह विडम्बना और दुर्भाग्य ही है कि भारत देश में एक विश्वविद्यालय के द्वारा मनुस्मृति के सभी पक्षों को जाने बिना यह निर्णय लिया गया। यहाँ एक दृष्टिकोण और भी हो सकता है कि किसी पुस्तक में यदि आप ऐसे अंश पाते हैं जो आप अपनी दृष्टि से गलत समझते हैं तो इस प्रकार के तो कई ग्रन्थ/पुस्तकें और भी हैं क्या आप उन सब पर रोक लगा देंगे? कुरआन और बाइबिल के बारे में क्या सोचते हैं? पौराणिक जगत् तो वेद और पुराण का नाम लेवा मात्र है। इस आदेश का देशव्यापी विरोध आर्यसमाज को करना चाहिए। इसी क्रम में मनुस्मृति के सम्बन्ध में समस्त अज्ञान का निवारण करने का अवसर भी मिल जाएगा। आर्यसमाज के शीर्ष अधिकारियों के संज्ञान में यह विषय लाया जा चुका है, पर ऐसे अन्य अनेकों विषय यथा समय उनके संज्ञान में लाये जा चुके थे परन्तु परिणाम रहा मोहनिद्रा। देखते हैं अब क्या होता है।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

❑❑❑

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों में से अनेकों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 542/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफिस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर, श्रीमती कुसुम गुप्ता; सूरत, डॉ. बी.पी. भटनागर; उदयपुर, डॉ. अवन्त कुमार सचेती; उदयपुर, श्री अरुण अब्रोल; मुम्बई

बलिदान दिवस पर विशेष

स्वामी श्रद्धानन्द

सत्य, समाज-सुधार और शहादत

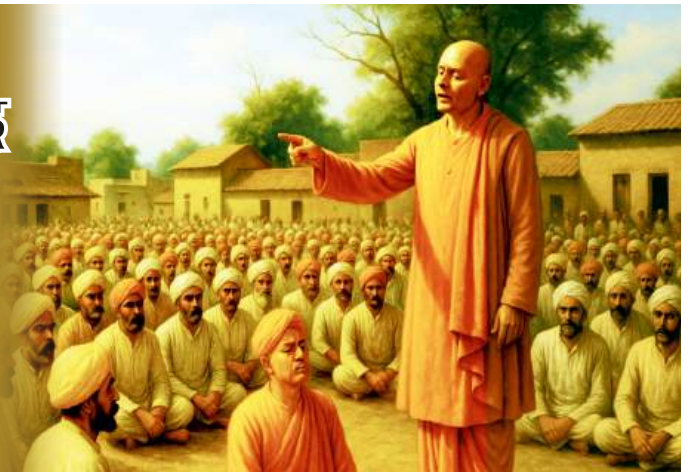

स्वामी श्रद्धानन्द आर्य समाज के सिद्धान्तों को प्रायोगिक रूप से आगे बढ़ाने वाले आर्य समाज के सर्वमान्य नेता थे। उनका व्यक्तित्व, उनका चरित्र, उनका कृतित्व आर्य समाज की धरोहर है। काश कि हम स्वामी जी के पथ का अनुसरण करने में अपने आप को अग्रसर करें।

स्वामी जी भारतीय समाज के पुनर्जागरण, राष्ट्रीय जागरण और धार्मिक सांस्कृतिक एकता के अग्रणी पुरोधा थे। उनका वास्तविक नाम 'मुन्शी राम' था। उन्होंने जब बरेली में महर्षि दयानन्द के दर्शन किये, उनका सान्निध्य प्राप्त किया तो उनके जीवन में आमूलचूल परिवर्तन आ गया। आर्य समाज के सिद्धान्तों से प्रभावित होकर उन्होंने न केवल वैदिक धर्म के उच्चादर्शों को तुरन्त अपनाया, बल्कि उसे जनसाधारण तक पहुँचाने के लिए जीवन अर्पित कर दिया। वे उन साधु-महात्माओं में थे जो केवल प्रवचन नहीं देते थे, बल्कि सीधे समाज की व्यावहारिक समस्याओं से संघर्ष करते थे। शिक्षा के क्षेत्र में आर्ष पद्धति को स्थापित करने हेतु उन्होंने सर्वस्व अर्पण कर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की।

हिन्दू समाज में नवचेतना का संचार

स्वामी श्रद्धानन्द ने जाति-भेद, छुआछूत और सामाजिक कुरीतियों का अत्यन्त प्रखर विरोध किया। उनका मानना था कि अगर भारत को स्वतंत्र और समर्थ होना है, तो सबसे पहले समाज को संगठित और जागरूक होना होगा। उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना कर शिक्षा को भारतीय, स्वदेशी और चरित्र-निर्माण आधारित रूप दिया। इस कार्य ने हजारों नवयुवकों में राष्ट्रीय भावना और देशप्रेम को बल दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान

स्वामी श्रद्धानन्द का सबसे साहसी और प्रभावशाली कार्य था- 'शुद्धि आन्दोलन'।

शताब्दियों की दासता और सामाजिक पतन के कारण अनेक हिन्दू समुदाय बल, प्रलोभन या दबाव में अन्य मतों में चले गए थे। हमारा अपने ही भाइयों से अमानवीय व्यवहार भी उनके दूर जाने का कारण बना। स्वामी श्रद्धानन्द ने उन्हें पुनः मूल वैदिक धर्म में लौटने का मार्ग दिखाया। यह कार्य धार्मिक स्वतंत्रता और व्यक्तित्व की स्वायत्तता पर आधारित था जो किसी भी लोकतांत्रिक और मानवतावादी मूल्य के अनुरूप है। क्योंकि विचारों को समझ कर यदि कोई उन्हें सत्य समझता है तो उसे उस मत को ग्रहण करने का अधिकार होना चाहिए, परन्तु बल प्रलोभन बहला-फुसलाकर मत परिवर्तन स्वीकार्य नहीं हो सकता। भारत में मुगल आक्रमण के पश्चात् सभी मतान्तरण तलवार के बल पर हुए यह अत्युक्ति नहीं है। अतः इनमें से जो अपने मूल मत में आना चाहें उनका स्वागत होना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस निमित्त प्रबल आन्दोलन चलाया।

१३ फरवरी १९२३, आगरा में अखिल भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा गठित की गई; स्वामी श्रद्धानन्द अध्यक्ष

बने और लाला हंसराज को प्रमुख पद मिला। श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा (मूल नामः दलित उद्धार सभा) का गठन अक्टूबर १९२१, दिल्ली में हुआ। बाद में ३० जनवरी १९२७ को इसका नाम बदलकर 'अखिल भारतीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा' किया गया।

स्वामी जी विशेष रूप से उत्तर भारत, राजपूताना और पंजर से हजारों 'मेवों' को पुनः हिन्दू धर्म में लेकर आए। ये शुद्धियाँ पूरी तरह स्वेच्छा पर आधारित थीं, जहाँ समुदाय स्वयं वापस आने की इच्छा व्यक्त करता था। परन्तु इस कार्य से कट्टर इस्लामी नेतृत्व, खासकर मुस्लिम लीग जैसे राजनीति में सक्रिय उग्र समूह, गहरे भयभीत हो उठे। उन्हें लगा कि हिन्दू समाज यदि पुनः संगठित हो गया तो उनकी राजनीतिक पकड़ और धर्मांतरण की परम्परा कमजोर पड़ जाएगी।

१९२०-१९२४ के काल में गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन तथा खिलाफत आन्दोलन के दौरान स्वामी श्रद्धानन्द ने साफ कहा था कि राजनीति का आधार राष्ट्रहित होना चाहिए, न कि किसी एक समुदाय की धार्मिक संवेदना। उन्होंने मुसलमानों के धार्मिक नेतृत्व द्वारा खिलाफत के नाम पर भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को भ्रमित करने की आलोचना की। इससे वे इस्लामी कट्टरवाद के निशाने पर आ गए। उनका

स्पष्ट वाक्य था- 'राष्ट्र पहले, मत बाद में।' और यह बात उन लोगों को स्वीकार नहीं थी जिनकी राजनीति धर्म-पन्थ की भावनाओं पर टिकी थी। ऐसे ही लोगों ने स्वामी जी की हत्या करने की योजना बनायी।

२३ दिसम्बर १९२६ को दिल्ली में अपने निवास (दरीबा कलां) में, एक युवा मुस्लिम कट्टरपन्थी अब्दुल रशीद ने भेंट के बहाने प्रवेश किया। उस समय स्वामीजी बीमार अवस्था में बिस्तर पर थे। वे असहाय थे, पर उनकी आवाज़ दृढ़ थी। अब्दुल रशीद ने स्वामी जी पर गोलियाँ चला दी। स्वामी जी के सेवक ने उसे पकड़ लिया। रशीद ने पुलिस में बयान दिया कि उसने स्वामीजी की हत्या 'इस्लाम की रक्षा' के लिए की।

स्पष्ट है- यह हत्या न व्यक्तिगत थी न आकस्मिक, बल्कि शुद्ध कट्टर धार्मिक उन्माद से प्रेरित थी। यह उस समय के कट्टर मौलवियों के भड़काऊ भाषणों का परिणाम थी, जो खुले आम स्वामी श्रद्धानन्द के विरुद्ध आग उगल रहे थे। अब्दुल रशीद को गिरफ्तार किया गया, अदालत में मुकदमा चला और उसे फांसी की सजा सुनाई गई।

परन्तु यह एक और दुःखद तथ्य है। कई कट्टर इस्लामी नेताओं ने रशीद को 'गाजी' कहकर सम्मानित किया, अर्थात् 'धर्म के लिए हत्या करने वाला योद्धा।'

यहाँ तक कि मौलाना मोहम्मद अली (जो खिलाफत आन्दोलन के बड़े नेता थे) ने १९२७ में अपने एक भाषण में कहा- 'अब्दुल रशीद ने स्वामी श्रद्धानन्द को इसलिए मारा, क्योंकि वह अपने धर्म की रक्षा करना चाहता था, और उसका उद्देश्य धार्मिक था।' यह कथन आज भी भारत के समन्वयवादी इतिहास पर एक काला धब्बा है। रवीन्द्रनाथ टैगोर, मदन मोहन मालवीय, एम.आर. जयकर जैसे नेताओं ने इसे 'खतरनाक, धार्मिक उन्माद का समर्थन' कहा। आज भी जब हम धार्मिक स्वतंत्रता, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक स्वाभिमान की बात करते हैं- स्वामी श्रद्धानन्द हमारे पथ-प्रदर्शक हैं।

- सिद्धम आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

❑❑❑

मृत्यु चिरंतन सत्य है। यह जीवन, आत्मा और शरीर का संयोग है। जब इनका वियोग होता है वही मृत्यु कहलाती है। परन्तु कोई व्यक्ति अपने जीवन में इस तरह की छाप छोड़ता है कि उसे लोग सदियों तक स्मरण रखें तो उसे अमर कहा जा सकता है, कहा जा सकता है कि उसने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली। अपने लिए तो सभी जीते हैं जो औरों के लिए जिए, अपने उद्देश्यों के लिए जिए, अपने सिद्धान्तों के लिए जिए और उसके लिए अपना सम्पूर्ण समर्पण कर दे वही व्यक्ति अमरत्व को प्राप्त होता है। **आर्यों की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के माननीय संरक्षक, आर्य समाज की अनेकानेक संस्थाओं के मार्गदर्शक, आर्य जगत् के भामाशाह श्री सुरेश चन्द्र जी आर्य ने अपने जीवन को इसी प्रकार जिया।** कौन सी ऐसी संस्था आर्य समाज की होगी जिसके विकास में उनकी अर्थ आहुति नहीं होगी? एक दानवीर भामाशाह के नाते तो उन्होंने बड़ी उदारता के साथ दान दिया। क्योंकि वे दान के महत्व और धन के सदुपयोग के मार्ग को भलीभाँति जानते थे। कहा गया है-

''दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।।''

अर्थात् धन की तीन गतियाँ हैं- दान, भोग और नाश। जो न दान करता है न भोग, उसका धन नष्ट हो जाता है। अतः उन्होंने अपने जीवन में इस सुभाषित को चरितार्थ किया।

श्री आर्य जी का जीवन वेद के सिद्धान्तों का मूर्त रूप था। पंच महायज्ञ का प्रतिदिन निर्वाह करना उनके स्वभाव में था। उनके परिवार में यह परम्परा सहज रूप से प्रवहमान है। उनका जीवन सत्य, सेवा और स्वाध्याय का त्रिवेणी संगम था। विनम्रता उनके व्यक्तित्व का भूषण था। उन्होंने हमें सिखाया कि संगठन में नेतृत्व की विनम्रता अनेक उलझी कड़ियों को सुलझा देती है। उनका व्यक्तित्व अनुशासन, त्याग और करुणा का अद्भुत संगम था। वे जहाँ भी गए, आर्य समाज की प्रतिष्ठा बढ़ी,और समाज में आशा का दीप प्रज्वलित हुआ।

वे आर्य समाज को केवल संगठन नहीं, एक जीवन्त आन्दोलन बना देने के लिए सदैव प्रयत्न करते रहे। आर्य समाज के समक्ष उपस्थित चुनौतियों से वे भली भाँति परिचित थे और उनको दूर करने के लिए संकल्पित थे। काश कुछ और वर्ष ईश्वर उनको देता।

उन्होंने कभी किसी से दूरी नहीं रखी। वे हर व्यक्ति को अपना बना लेते थे। इसका प्रमुख कारण उनके अन्दर धैर्य होना था। वे अद्भुत श्रोता थे। अपने विरोधी की बात को भी पूरी तरह सुनते थे। उनके विरोधी भी उनकी प्रशंसा करने में संकोच नहीं करते थे। **आर्य समाज में आज जो सर्वत्र सैद्धान्तिक क्षरण दिखाई देता है वह उससे बहुत चिन्तित थे।** इण्टरनेट के माध्यम से विरोधियों द्वारा वेद और सत्यार्थ प्रकाश पर जिस तरह से प्रहार किया जा रहे थे और आर्य समाज जिस तरह से निष्प्राण होकर के उनको देखता सुनता रहता था, इससे वे अत्यधिक आहत थे और चाहते थे कि आर्य समाज के विद्वान् ऐसे प्रहारों का तर्कपूर्ण जवाब दें। इसीलिए सार्वदेशिक सभा में धर्मार्य सभा जो अब अतीत की वस्तु हो गई थी, जो कि सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपसभा थी,

आदरणीय सुरेश जी उसको पुनः प्रतिष्ठित करना चाहते थे, उसके लिए उनके प्रयत्न जारी थे।

वस्तुतः अब उन्होंने भली-भांति समझ लिया था कि **बड़े-बड़े चमक दमक वाले सम्मेलन करना आवश्यक नहीं है। धन का प्रयोग मूलभूत योजनाओं में करना चाहिए जिससे आर्य समाज का वास्तविक विस्तार हो।** ऐसे प्रयास करने चाहिए कि आर्यजन सिद्धान्तनिष्ठ बनें, सत्यनिष्ठ बनें और जब ऐसा हो जाएगा तो आर्य समाज के समक्ष उपस्थित बहुत सारी चुनौतियाँ स्वतः समाप्त हो जाएँगी।

साहित्य सृजन में उनकी बहुत रुचि थी। सत्यार्थ प्रकाश न्यास को भी इस हेतु जब आवश्यकता होती थी उनका सहयोग प्राप्त होता था और सत्य प्रकाशन मथुरा को तो लगातार पुरानी पुस्तकों को मुद्रित और प्रकाशित करने के लिए धन देने में वे उदार रहते थे। मित्रों! **सच कहूँ तो जो नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र आज पूरे विश्व में एक आश्चर्यजनक स्मारक के रूप में अपनी धूम मचाए हुए हैं अगर (कीर्ति शेष) सुरेश जी न होते तो शायद यह स्मारक बन भी नहीं पाता।**

यह ठीक है कि बाद में अनेक दानदाताओं ने भी सहयोग किया, परन्तु प्रारम्भ में सिर्फ आपकी बातों पर विश्वास करके अगर कोई धनपति धन देता है वह बड़ी बात होती है। बाद में कारवां जुट जाता है। **हमारे बड़े भाई आदरणीय सुरेश चन्द्र जी आर्य और डॉलर इन्डसट्रीज के स्वामी पूज्य दीनदयाल जी गुप्त न होते, जिन्होंने इस परियोजना को प्रारम्भिक सम्बल प्रदान किया तो शायद आज (NMCC, UDAIPUR) जो हजारों लाखों लोगों को वैदिक मन्तव्यों का सन्देश दे रहा है, ऐसा न हो पाता।**

पूज्य भाईसाहब का न्यास के प्रति और व्यक्तिगत रूप से हमारे प्रति बहुत ही स्नेह था। आर्य समाज से सम्बन्धित कोई ऐसी चर्चा नहीं थी, कोई ऐसा विषय नहीं था जिसके बारे में हमारे साथ वह मंथन ना करते हों। इतना प्रेम, इतना विश्वास, इतना स्नेह विरले लोगों से ही प्राप्त होता है। आज उनके जाने पर ऐसा लगता है कि जैसे आपके ऊपर से छत गायब हो गई हो। **पर यह पीड़ा तो जिस प्रकार से उनका परिवार सहन करेगा उसी प्रकार से उनका आर्य सामाजिक परिवार भी सहन करेगा, इसके अतिरिक्त और कोई चारा भी तो नहीं है।** हाँ! हम लोग संकल्पित हैं कि उन्होंने जो दशा और दिशा प्रदान की है उसको बनाए रखेंगे, उसको उच्च स्तर पर ले जाएँगे और उनके अभाव में भी सर्वत्र उनके विचारों का प्रसार दिखे ऐसा प्रयास हम करते रहेंगे।

अन्त में यही कहूँगा कि उनका जीवन त्याग और समर्पण की मिसाल था। मृत्यु के पश्चात् नश्वर शरीर को देहदान के रूप में मेडिकल कॉलेज को दे देना, जहाँ पारिवारिक परम्परा को निभाना भी था वहाँ सर्वोच्च उत्सर्ग की मिसाल भी था। **जानकारी के अनुसार उनकी नेत्र ज्योति से अंधेरे में रोशनी की तलाश करती हुई दो आँखों को प्रकाश मिल गया है।** इससे बड़ी मानवता की क्या मिसाल हो सकती है।

हम न्यास की ओर से, सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से एवं उदयपुर के सभी आर्यजनों की ओर से पूज्य सुरेश चन्द्र जी आर्य को विनम्र श्रद्धांजलि देते हैं।

- अशोक आर्य
अध्यक्ष- श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास , उदयपुर

❑❑❑

हर शाख पे 'उल्लू' बैठा है

मेरे प्रबुद्ध पाठकगण! अब मैं कुछ उन बिन्दुओं पर चर्चा करना चाहूँगा, जो देश में उठाये जा रहे हैं और जिन प्रश्नों से घायल यह देश हम सबको धिक्कार रहा है। वे बिन्दु हैं-

१. वेद केवल आर्यों (हिन्दुओं) की साम्प्रदायिक रचना है एवं वर्तमान के कथित ब्राह्मण, ठाकुर (राजपूत) एवं बनिये ही केवल आर्य (हिन्दू) हैं। पूर्व ऋषि, मुनि, देव सभी इन्हीं के पूर्वज थे, जो विदेशी लुटेरे थे। उन्होंने इस देश पर आक्रमण करके राक्षस, असुर, वानर, दानव आदि जो इस देश के मूल निवासी थे, को परास्त करके इस देश पर अधिकार कर लिया। वतर्मान में कथित पिछड़ा वर्ग, दलित, सभी वर्गों की महिलायें एवं धर्मान्तरित ईसाई, मुस्लिम, जैन, बौद्ध आदि राक्षसों असुरों, दैत्यों की सन्तान हैं तथा इस देश के मूलनिवासी ये ही हैं। वेद, शास्त्र, रामायण, महाभारत, गीता, उपनिषद् आदि विदेशी लुटेरे आर्यों (वर्तमान ब्राह्मण, ठाकुर, बनिया) के ही ग्रन्थ हैं। होली, दीपावली, रक्षाबन्धन, दशहरा, महाशिवरात्रि, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमी आदि विदेशी पर्व हैं। वेदादि शास्त्र मानवता-विरोधी, राष्ट्र-विध्वंसक, सामाजिक-विघटनकर्त्ता, दलित-नारी आदि के शोषक, मांसाहार, मदिरापान, व्यभिचार, पशु-नरबलि आदि सभी पापों के पोषक हैं।

२. प्राचीन ऋषि-मुनि, देवी-देवता एवं अन्य राजा आदि घोर दुराचारी, मद्यपी, क्रोधी, लोभी एवं क्रूर स्वभाव वाले थे, जो अपनी माता, बहन, पुत्री आदि से भी दुराचार करने में लज्जा का अनुभव नहीं करते थे। श्रीरामादि क्षत्रिय राजा, जिन्हें कोई परमात्मा का अवतार कहता है, तो कोई मर्यादा पुरुषोत्तम कहता है, वे भी मद्यपी, मांसाहारी, नारी व दलितों पर अत्याचार करने वाले थे। योगेश्वर कहाने वाले श्रीकृष्ण अत्यन्त कामी, क्रूर, दुराचारी, छली-कपटी और चोर थे।

अयि! वेदभक्त कहाने वालों! सनातन धर्म की जय घोष करने वालों! महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, राम, कृष्ण, हनुमान आदि की पूजा करने वालों! आर्य वा हिन्दू एवं भारत वा हिन्दुस्तान पर गर्व करने वालों! क्या आपका हृदय इन विचारों के तीक्ष्ण शूलों से कभी आहत होता है? क्या आपके मन-मस्तिष्क में इन विचारों का उत्तर देने की कोई क्षमता है? अथवा आप इस प्रकार की विचारधारा मानने वालों को विधर्मी, नास्तिक, पापी वा देशद्रोही जैसे अपशब्दों से सम्बोधित करके उनकी निन्दामात्र को ही अपना धर्म व कर्त्तव्य समझते हैं? मैं आपको निवेदन कर दूँ कि ये विचार मेरे हृदय में शूल की भाँति सदैव चुभते रहते हैं। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का प्रत्येक सच्चा भक्त इन विचारों से गम्भीर रूप से आहत है परन्तु बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि इस

सब पापपूर्ण प्रचार के लिये केवल इनके पापी प्रचारक ही पूर्ण उत्तरदायी नहीं हैं। मैं इन्हें केवल प्रतिक्रियावादी एवं कुछ अंशों में ही उत्तरदायी मानता हूँ । अयि! सनातन धर्मियो एवं देशभक्ति के नाम पर गीत संगीत-नृत्य व जयघोष मात्र करने वाले मेरे अभागे मित्रों! क्या आपने अपने कथित पुराणादि, धर्मशास्त्रों एवं रामायण, महाभारत जैसे ऐतिहासिक ग्रन्थों को पढ़ने का भी कभी प्रयास किया है? जिनके कारण ही हम सबको वेदादि सत्य धर्मशास्त्रों एवं अपने ही महापुरुष पूर्वजों के बारे में ऐसी क्रूर गप्पें सुनने को बाध्य होना पड़ रहा है। मेरा आपसे आग्रह है कि आप जिन-जिन शास्त्रों पर गर्व करते हैं, उन्हें एक बार स्वयं अवश्य पढ़ें। यदि आपके पास इतना समय नहीं हो, तो मेरे आगे उद्धृत वचनों को ध्यान से पूर्ण निष्पक्ष होकर पढ़ने का कष्ट करें।

अब मैं क्रमशः प्रत्येक विचारधारा पर अपनी समीक्षा लिखने का प्रयास करता हूँ।

१. यह कल्पना उन कथित विदेशी विद्वानों की है, जो इस देश में ईसाई विचारधारा की स्थापना करके अंग्रेजी राज्य को अखण्ड रखना चाहते थे। **उन्होंने वेद एवं ब्राह्मण ग्रन्थों के अलंकारिक आख्यानों में मानवीय इतिहास समझने की भूल की** और वेद में कथित आर्यों और अनार्यों का युद्ध मानकर ऐसी विघटनकारी कल्पनायें प्रस्तुत कीं।

इन्हीं विचारों के आधार पर हमारे देश में अनेक राष्ट्रविरोधी जातीय संगठन खड़े हो गये हैं, विदेशी प्रेरणा व धन के बल पर इस देश में आर्य-अनार्य, देव-दानव आदि के नाम का नया विवाद खड़ा कर रहे हैं। वे लोग आर्यों, देवों को विदेशी आक्रान्ता तथा अनार्यों, दस्युओं को इस देश का मूल निवासी बताते हैं। राक्षस, असुर, दानव, दैत्य, वानर, नाग आदि वंशों को भी मूल निवासी बताते हैं। इस विषय पर इस देश के अनेक कथित प्रबुद्ध अनेकविध साहित्य सृजन कर रहे हैं। ये साहित्य सर्जक इस देश में बड़े बुद्धिजीवी माने जाते हैं परन्तु हमारी दृष्टि में वे इस विषय में नितान्त अनाड़ी तथा विदेशी कथित विद्वानों के उच्छिष्ठ भोजी हैं, जिनके विचारों को आधार बनाकर अनेक विदेशी षड्यन्त्रों के पोषक भारत के दलित व कमजोर वर्गों के साथ कथित पिछड़े वर्ग के भोले-भाले भाइयों को कथित सवर्णों के विरुद्ध भड़काकर भारत को भयंकर गृहयुद्ध की ओर ले जाने का प्रबल उद्योग कर रहे हैं। इनकी भाषा अत्यन्त आक्रामक और अनिष्ट है, वैसी ही जैसी की मध्यकालीन कथित ब्राह्मण वर्ग की कथित शूद्र वर्ग के विरुद्ध थी। इस कारण इन आक्रोशित नादान भाइयों को मैं दोषी भी नहीं मान सकता। **पुनरपि सदियों पूर्व की बातें उखाड़ कर वर्तमान पीढ़ी के प्रति प्रतिशोध भड़काकर देश को गृहयुद्ध की ओर ले जाना कदापि न्याय वा बुद्धिमानी का काम नहीं है, बल्कि इससे सर्वनाश ही होगा।** हाँ, दुःख तो इस बात का है कि सत्य, न्याय कहीं भी दिखायी नहीं देता। अंग्रेज लोग जैसा विखण्डित भारत चाहते थे, उनका स्वप्न पूर्ण होता दिखायी दे रहा है। इन युद्धोन्मादग्रस्त किसी भी व्यक्ति वा वर्ग को यह ज्ञात नहीं कि भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिस किसी ने स्वदेश के किसी भी राजा आदि को नष्ट करने हेतु विदेशी शक्तियों का साथ दिया, वह व्यक्ति वा वर्ग अपने स्वदेशी शत्रु को मरवाकर स्वयं भी विदेशी क्षणिक स्वार्थी मित्रों के हाथों मारा गया और धीरे-धीरे देश पराधीन हो गया, जिसके कारण सम्पूर्ण प्रजा को ही अत्याचारों का सामना करना पड़ा। शासक वर्ग को अत्याचारों का सामना अधिक करना स्वाभाविक था।

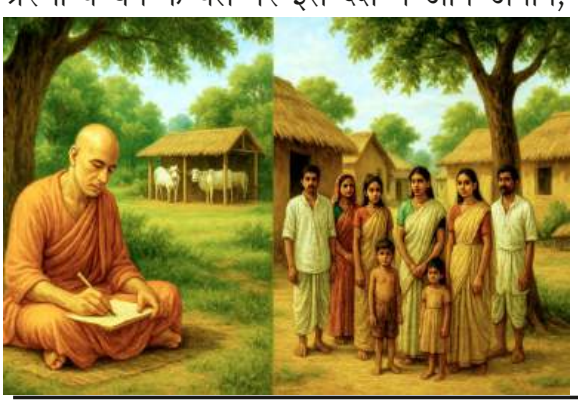

इसी प्रकार इतिहास आज फिर अपनी पुनरावृत्ति करने की ओर अग्रसर है। इससे जिन्हें मारने व सताने का लक्ष्य है, वे तो मरेंगे ही, साथ ही जो भारतीय शासन को अपनी मुट्ठी में ही लेने का प्रयास कर रहे हैं, वे भी अन्ततः बच नहीं पायेंगे। इससे लाभ केवल विदेशी ताकतों को ही होगा और विदेशी ताकतों का षड्यन्त्र ही यही है परन्तु ये नादान भाई जो अपने को ही मूल निवासी कहते है मत-मतान्ध होकर किसी भी हितैषी की बात भी सुनना नहीं चाहते हैं। समझता हूँ कि इन नव प्रबुद्धजनों को मेरी भी बातें न तो सत्य लगेंगी और न रुचिकर ही। आज सारे देश में मैकाले की कुटिल शिक्षा का जो साम्राज्य है, उसी का यह परिणाम है कि आज न केवल नादान संगठन अपितु देश की दूषित व घृणित राजनीति से नितान्त मूर्खा शिक्षा नीति ही इस सब पाप की जड़ है और उसका बीज तो वही है, जो मध्य काल में कथित पुराणादि अनार्ष ग्रन्थ मनुस्मृति आदि आर्ष ग्रन्थों के प्रक्षेप हैं, जिनकी ओर महर्षि दयानन्द सरस्वती के अतिरिक्त किसी भी समाज सुधारक वा देशभक्त माने जाने वाले व्यक्ति का ध्यान नहीं गया और जिस महर्षि का ध्यान गया और भारत के काले अंग्रेज शासकों, संविधान निर्माताओं वा विदेशियों के उच्छिष्ठभोजी शिक्षाविदों का ध्यान नहीं गया, तब कौन इस देश को सन्मार्ग दिखाता? यहाँ तो 'हर शाख पे उल्लू बैठा है।'

लेखक- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
प्रमुख- वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान
भागलभीम, भीनमाल (राज.)

❑❑❑

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।
आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन-चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन-चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : **AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001** में जमा करा कृपया सूचित करें।

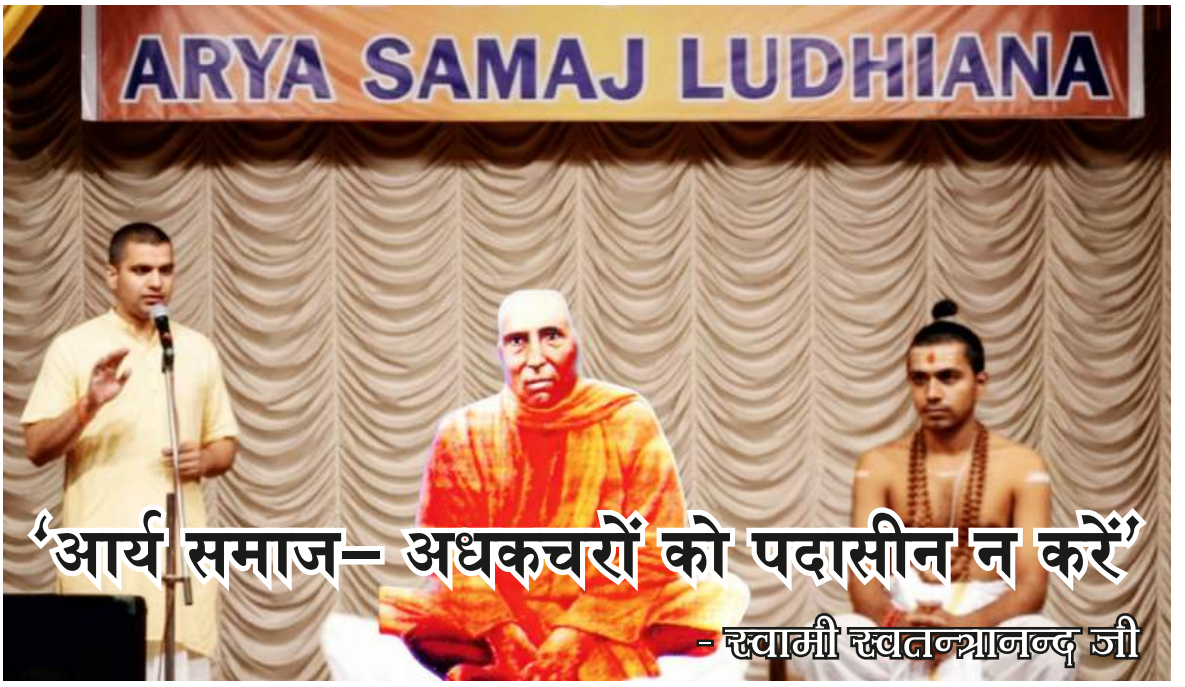

‘आर्य समाज– अधकचरों को पदासीन न करें’

- स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

सन् १९५१-५२ में आर्य समाज साबुन बाजार, लुधियाना के वार्षिकोत्सव पर एक **‘सर्व-धर्म सम्मेलन’** का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम एक जैन विचारक मंच पर आए और आर्य समाज का नाम लेकर उस पर आलोचनात्मक टिप्पणियाँ करने लगे। उनका कहना था कि ‘‘खण्डन-मण्डन की प्रवृत्ति हिंसा है; इसे नहीं छेड़ना चाहिए।’’

उनके पश्चात् एक ‘सनातन धर्मी वक्ता’, जो राजनैतिक व्यक्ति भी थे, बोले। उन्होंने भी अपना पक्ष रखते हुए आर्य समाज के विचारों का विरोध किया।

अब बारी थी ‘आर्य समाज के शास्त्रार्थ-महारथी पंडित शान्ति प्रकाश जी की। उन्होंने बिना किसी व्यक्ति का नाम लिए, बिना किसी मत का खण्डन किए, अत्यन्त शालीनता से वेदों के आधार पर ईश्वर के स्वरूप को स्पष्ट किया।

इतने में वही सनातनी वक्ता शोर मचाने लगे कि ‘‘सनातन धर्म का खण्डन किया जा रहा है!’’

सभा के अध्यक्ष ‘स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी’ ने तत्काल व्यवस्था दी-‘‘यहाँ किसी का खण्डन नहीं हो रहा है, केवल वेद-मन्त्रों का अर्थ बताया जा रहा है।’’

अध्यक्ष की यह स्पष्ट घोषणा सुनकर वह सनातनी वक्ता मौन हो गए। सभा सफलता की ओर अग्रसर हुई और उपस्थित आर्यजन अत्यन्त प्रसन्न थे। रात्रि में स्वामी जी के मुख्य व्याख्यान से पूर्व, आर्य समाज के प्रधान ने विशाल जनसमुदाय के समक्ष घोषणा की- **‘‘आज दिन में सर्व-धर्म सम्मेलन में पंडित शान्ति प्रकाश जी ने जो अन्य मतों का खण्डन किया है, उसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ।’’**

यह वक्तव्य सुनते ही उपस्थित आर्य जन स्तब्ध रह गए। दरअसल, प्रधान जी ने यह घोषणा जैन और पौराणिक समुदाय को प्रसन्न करने के उद्देश्य से की थी, क्योंकि आगामी नगर पालिका चुनाव में उन्हें पौराणिक वक्ता से टिकट का आश्वासन मिला हुआ था।

परन्तु यह राजनीतिक स्वार्थवश किया गया वक्तव्य ‘स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न’ लगाता था और आर्य समाज की गरिमा को ठेस पहुँचाता था।

इस मनमानी पर वैद्य ‘लोकनाथ जी’ ने तीव्र रोष प्रकट करते हुए कहा- ‘‘पंडित शान्ति प्रकाश जी ने किसी का खण्डन नहीं किया था, उन्होंने केवल वैदिक पक्ष रखा था। प्रधान जी को किस अधिकार से आर्य

समाज की ओर से क्षमा माँगने की आवश्यकता पड़ी? यह तो आर्य समाज के सिद्धान्तों को निर्बल करना है।''

उन्होंने यह रहस्य भी उजागर किया कि प्रधान जी ने यह सब नगर पालिका के चुनाव में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए किया है। अतः उन्होंने माँग की कि- **''धर्म में राजनीति के इस हस्तक्षेप के कारण प्रधान जी को तुरन्त त्यागपत्र देना चाहिए, तभी उत्सव का सम्मान रहेगा।''**

जब जनसमूह ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी से इस विषय पर उनकी व्यवस्था चाही, तो उन्होंने बड़ी स्पष्टता से कहा- ''प्रधान जी दोषी हैं, उन्हें अपना त्यागपत्र दे देना चाहिए। आर्य समाज का अपमान न करें।'

स्वामी जी की यह दृढ़ घोषणा सुनकर सभा में अनुशासन और सत्य की प्रतिष्ठा पुनः स्थापित हुई। **प्रधान जी को तत्काल त्यागपत्र देना पड़ा।**

उसी दिन स्वामी जी ने अपने व्याख्यान में इस प्रसंग पर बोलते हुए कहा- ''अधकचरों को आर्य समाज का अधिकारी नहीं बनाना चाहिए। **केवल वे ही व्यक्ति पद पर आसीन हों जो वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ हों, जिनमें श्रद्धा और आदर्श आचरण हो।''**

'आज की स्थिति : स्वार्थ और अधकचरापन'

स्वामी जी की यह चेतावनी आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। आज के दौर में आर्य समाज के कुछ पदों पर ऐसे व्यक्ति विराजमान हैं, जो हैदराबाद में सनातनी उत्सव में जाकर गणेश जी की पूजा कर चुके हैं, जो मेरठ में किसी सभा-प्रधान की माता की तेरहवीं में लड्डू खा चुके हैं, जो किसी विशेष राजनैतिक दल के पक्ष में विज्ञापन प्रकाशित कर चुके हैं, और जो अनेक संगीन आरोपों में घिरे होने के बावजूद, साधु-संन्यासियों के अनुरोध तथा स्वयं दिए वचन के बाद भी अपने पद से त्यागपत्र नहीं देते। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी जैसे 'न्यायशील, निर्भीक और धर्मनिष्ठ संन्यासी' आज दुर्लभ हैं।

यदि ऐसे व्यक्तित्व आज भी होते, तो ये ''रंगे सियार'' आर्य समाज के सिंहासन के निकट भी नहीं फटक पाते। वे न केवल स्वयं का, बल्कि अपने पूरे परिवार का त्यागपत्र दिलाकर जाते। परन्तु, समय का फेर है- आज चारों ओर अधकचरे नेतृत्व की बाढ़ है। हर दिशा में वही दिखता है, जो न तो वैदिक भावना समझता है, न आर्य समाज की परम्परा का सम्मान करता है।

काश! आर्य जन स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की उस चेतावनी पर ध्यान देते- ''अधकचरों को पदासीन न करें, अन्यथा आर्य समाज की जड़ें खोखली हो जाएँगी।''

- प्रेषक : साहिल आर्य

अक्टूबर 1992 के राजधर्म मासिक पत्र से साभार

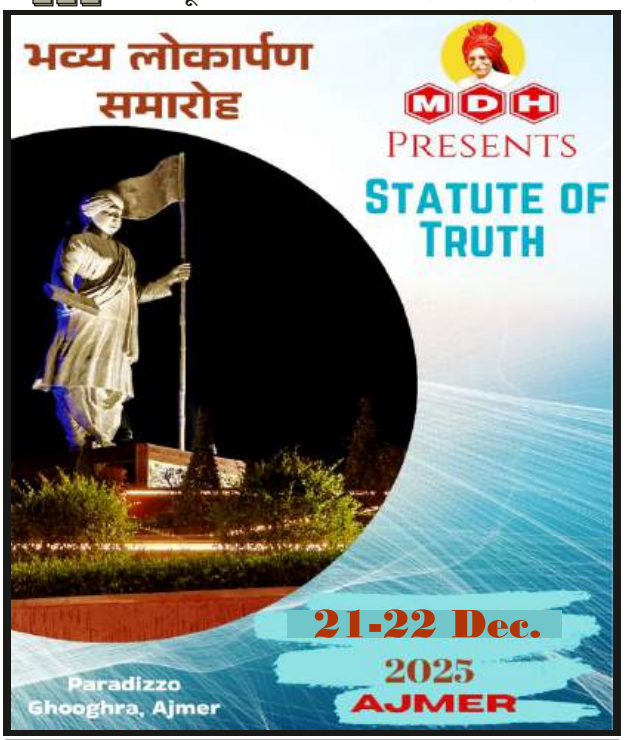

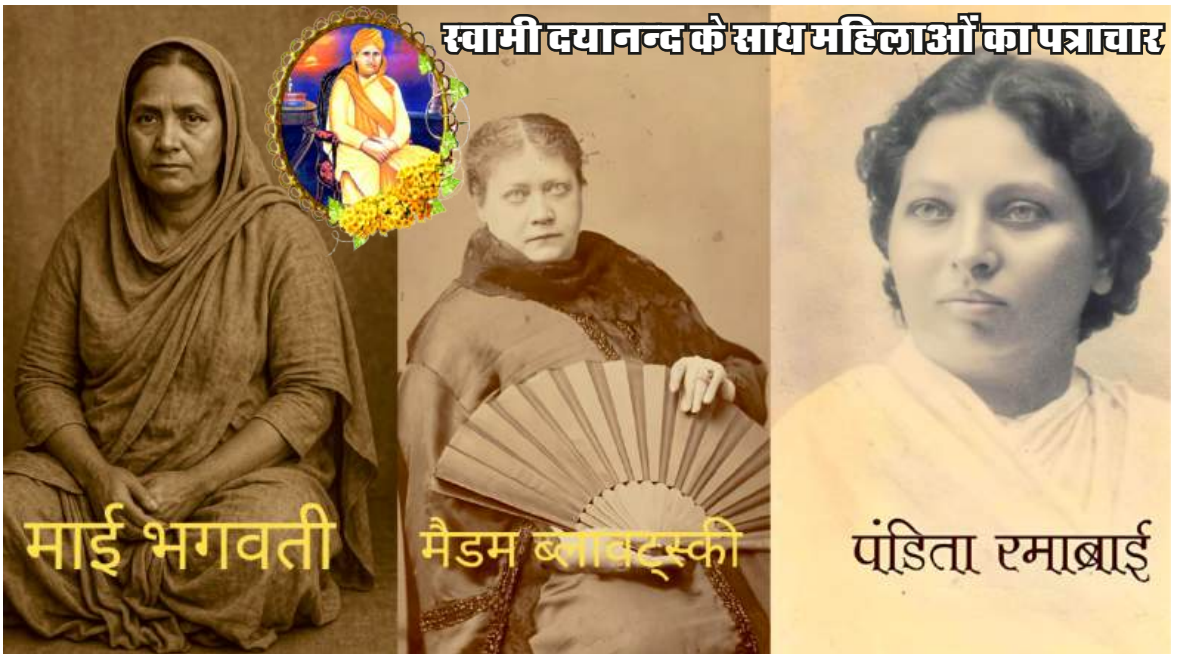

स्वामी दयानन्द सरस्वती का तीन महिलाओं के साथ हुआ पत्राचार उपलब्ध होता है।

१. एच.पी.ब्लेवेट्स्की का अंग्रेजी में।

२.माई भगवती का हिन्दी में।

३.पण्डिता रमाबाई का संस्कृत में।

४. हेलेना पेत्रोव्ना ब्लावात्स्की (१८३१-१८९१) एक रूसी तांत्रिक और लेखक थीं, जिन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान और गूढ़ विद्या में गहरी रुचि ली।

- उनका मानना था कि दुनिया के सभी धर्मों के पीछे एक प्राचीन ज्ञान या "सनातन धर्म" छिपा है।
- उन्होंने कई किताबें लिखीं, जिनमें 'द सिक्रेट डॉक्ट्रिन और आइसिस अनवील्ड' प्रमुख हैं।
- कर्नल हेनरी स्टील ओल्कोट और हेलेना पेत्रोव्ना ब्लावात्स्की थियोसोफिकल सोसाइटी के संस्थापक थे। वे दोनों १९वीं शताब्दी के आध्यात्मिक नेता थे जिन्होंने पूर्वी धर्मों और दर्शन को पश्चिमी दुनिया में लाने का प्रयास किया।
- कर्नल ऑल्कॉट थियोसोफिकल सोसायटी के सह-संस्थापक और पहले अध्यक्ष थे। उन्होंने मैडम हेलेना पेत्रोव्ना ब्लावात्स्की के साथ मिलकर १८७५ में न्यूयॉर्क में इस संस्था की स्थापना की थी।
- भारत में स्वदेशी आन्दोलनः उन्होंने भारतीयों को स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया, जिसके कारण थियोसोफिकल सोसाइटी की बैठकों में स्वदेशी आन्दोलन के शुरुआती विचारों पर चर्चाएँ होती थीं।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती यद्यपि अंग्रेजी भाषा के ज्ञाता नहीं थे, पुनरपि अपने सहयोगियों द्वारा उन्होंने पंडित सुन्दरलाल, रामनरायण, रामाधार बाजपेई, गोपाल राव हरिदेशमुख आदि को अंग्रेजी में पत्र लिखवाये। उन पत्रों पर उन्होंने अपने हस्ताक्षर देवनागरी में किए। थियोसोफिकल सोसाइटी के संस्थापक कर्नल ओल्काट-मैडम ब्लावात्स्की की ओर से हरिश्चन्द्र चिन्तामणि के माध्यम से अंग्रेजी में किए पत्राचार का उत्तर स्वामी जी संस्कृत में देते थे।
- थियोसोफिकल सोसाइटी की ओर से अधिकतर पत्र सभापति एच.सी. ओल्कोट द्वारा लिखे गए, पर एक पत्र एच.पी.ब्लैवेट्स्की की ओर से भी लिखा गया मिलता है-

May 21st 1878

My Dear Sir and Brother - As I am about to leave the city of New York to take a

needed rest at the sea-shore, With no probability of my returning before I sail for Europe and India (whether I will stop in London one month or one year fate alone knows) I have concluded to send a portion of my books direct to Bombay to await my coming (some 250 volumes and as many unbound books), The President adds some of his. If any accident should prevent my coming there in person, **you will please present them to any library of Arya samaj.** By 'accident' I mean Death (for nothing except death will prevent our coming to India in due season- I have decided] as soon as I am in the Mother&Land] to present the greater part of the volumes to such Samaj as you may designate(and I hope to bring a load more from England, and Olcott also).

(I hope you will not feel annoyed at my writing and bothering you so often, but I assure you I never breathe so easily as when I either write to, or receive letters from] India- It seems to me as if I was sending a portion of my heart and soul to the blessed Mother-Land every time).

(Sd. H.P. Blavatsky

(महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र व्यवहार भाग १ पृष्ठ१८०)

हिन्दी भाषानुवाद

न्यूयॉर्क २१ मई सन् १८७८

हे प्रिय भ्राता,

चूँकि मैं न्यूयॉर्क नगर से चलने को ही हूँ, मैं यूरोप और आर्यावर्त्त जाने से पूर्व समुद्र किनारे इच्छित विश्राम पाऊँ और यह सम्भव नहीं है कि जाकर वापस आ जाऊँ। मैं लन्दन में एक वर्ष ठहरूँगी- यह ईश्वर को विदित है। इसलिए मैंने अपनी कुछ पुस्तकें मुम्बई में भेजने का विचार कर लिया है। कोई ढाई सौ प्रतियाँ सजिल्द हैं और इतनी ही बिना जिल्द हैं। सभापति ने कुछ अपनी ओर से दी हैं। यदि मैं किसी (संयोग से वहाँ स्वयं न आ सकी तो आप कृपा करके आर्यसमाज के किसी पुस्तकालय को भेंट कर दीजिए। संयोग से मेरा अभिप्राय मृत्यु से है क्योंकि मृत्यु के अतिरिक्त और कोई चीज हमको आर्यावर्त्त में उचित समय पर पहुँचने से रोक नहीं सकती।) मैंने यह निश्चय कर लिया है कि जब मैं अपनी जन्मभूमि (आर्यावर्त्त) में पहुँचूंगी तो ऐसी बहुत सी पुस्तकें उस समाज को भेंट करूँगी जिसको आप बतलाएँगे और मुझे आशा है कि मैं पुस्तकें उस इंग्लैंड से लाऊँगी, अल्काट साहब भी लावेंगे। मैं आशा करती हूँ कि आप मेरे लिखने पर और इतना कष्ट देने पर अप्रसन्न न होंगे परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि मैं इतनी प्रसन्नता का श्वास कभी नहीं लेती हूँ जैसे कि इस समय। जबकि मैं आर्यावर्त्त को लिखती हूँ या आर्यावर्त्त की चिट्ठियाँ मेरे पास आती है, मुझे ऐसा प्रतीत होता है मानो मैं अपने मन और प्राणों का एक भाग शुभ जन्मभूमि (अर्थात् आर्यावर्त्त) को प्रत्येक समय भेज रही हूँ। - एच.पी. ब्लैवेट्स्की

माई भगवती का पत्र

होश्यारपुर (पंजाब) जिले के हरयाणा ग्राम की निवासिनी माई भगवती ने स्वामी दयानन्द का शिष्यत्व स्वीकार कर अपने जीवन को धर्म प्रचार में लगाने निश्चय किया था। स्वामीजी ने अपने पत्र में उसे लाहौर जाकर वहाँ स्त्रियों में धर्म-प्रचार करने के लिए निर्देश दिया। इसके उत्तर में उसने अपने निवास स्थान हरयाणा से ४ नवम्बर १८८२ को स्वामीजी को एक पत्र लिखा और निवेदन किया कि आप मुझे जहाँ जाने के लिए आदेश करेंगे, मैं वहीं चली जाऊँगी। साथ ही यह भी लिखा कि आप लाहौर के आर्यसमाज को मेरे लिए निवास तथा भोजन की व्यवस्था करने के लिए लिखने की कृपा करें। पत्र में यह लिखा था कि वह तो पहले ही लाहौर ही जाना चाहती थी किन्तु प्रति चौथे दिन चढ़ने वाले ज्वर से आक्रान्त हो जाने के कारण वह वहाँ नहीं जा सकी। माई भगवती ने पत्र में यह भी पूछा कि गौरक्षा के लिए आप जो

प्रयत्न कर रहे हैं उसमें कितनी प्रगति हो रही है तथा सत्यार्थप्रकाश का संशोधित संस्करण कब तक तैयार हो जायेगा? (भाग २ पृ.१७१)

पण्डिता रमाबाई के तीन संस्कृत पत्र

स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा युवती पण्डिता रमाबाई को लिखे दो संस्कृत पत्र व पं.रमाबाई द्वारा स्वामी जी को संस्कृत भाषा में लिखे तीन पत्र प्राप्त होते हैं।

कर्नाटक प्रान्त की निवासिनी पण्डिता रमा बाई ने अल्पावस्था में ही संस्कृत में व्युत्पन्नता प्राप्त कर ली थी। वह अभी युवा ही थी कि उसने अपने परिजनों के साथ भारत की तत्कालीन राजधानी कलकत्ता की यात्रा की। स्वामी दयानन्द को जब रमा का विस्तृत परिचय मिला और उसके वैदुष्य एवं शास्त्रज्ञता की जानकारी प्राप्त हुई तो उन्होंने उसे पत्र लिखा तथा आग्रह किया कि वह उपनिषद् कालीन ब्रह्मवादिनी गार्गी की भाँति भारत की नारियों को शिक्षित एवं सुसंस्कृत करने में स्वयं को लगाये। उत्तर में रमा ने ६ जुलाई १८८० को स्वामीजी की सेवा में एक संस्कृत पत्र लिखा, जिसमें उसने अपना इतिवृत्त प्रस्तुत किया, साथ ही संकोच के साथ यह भी स्वीकार किया कि भारतवर्ष की भूषण स्त्री-रत्न गार्गी की भाँति स्वजाति की उन्नति साधना उस जैसी बालिशमति बालिका के लिए शक्य नहीं है। उसने अपने भाई की मृत्यु की भी सूचना दी तथा लिखा कि कुछ समय पश्चात् वह स्वामीजी के दर्शनार्थ उनकी सेवा में उपस्थित होगी। **(ऋ.द.के पत्र व विज्ञापन भाग २ पृ. १०२)**

१ अगस्त १८८० को उसने कलकत्ता से जो संस्कृत पत्र स्वामीजी को लिखा उसमें उसने अपने जन्मस्थान (ग्राम गंगामूल-मैसूर राज्य) का उल्लेख किया तथा अपनी आयु (१२ वर्ष) बताई। यह भी लिखा कि उसके माता-पिता की मृत्यु हो चुकी है तथा अभी हाल में दिवंगत भाई उससे छः वर्ष बड़ा था। उसने पुनः आशा प्रकट की कि चार पाँच दिनों के भीतर वह स्वामीजी के दर्शनार्थ उनके निकट उपस्थित होकर स्वयं के जन्म को कृतार्थ करेगी। (ऋ.द.के पत्र व विज्ञापन भाग ३ पृ. १११-११२) रमा का एक अन्य संस्कृत पत्र बिना तिथि का है। जिसमें उसने स्वामीजी के समक्ष शास्त्रीय विषयों पर अपने विचार प्रकट किये तथा अपने मतभेदों का भी उल्लेख किया।

लेखक- डॉ. नरेश बत्रा
प्रधान आर्य समाज रामनगर, अम्बाला छावनी

रवि नैय्यर जी को मातृ-शोक

आर्य समाज आदर्श नगर, जयपुर के प्रधान माननीय रवि नैय्यर की पूज्या माताजी श्रीमती दमयन्ती देवी जी नैय्यर का देहावसान दिनांक २० नवम्बर २०२५ को हो गया।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास ; उदयपुर तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास | **भवानीदास आर्य**, मंत्री-न्यास | **डॉ. अमृत लाल तापड़िया**, संयुक्तमंत्री-न्यास

–स्वास्थ्य–
जीवन का प्रथम धर्म

आचार्य चाणक्य ने कहा–

शरीरं प्रधानम् खलु धर्मसाधनम् शरीरस्यापि च नित्यं संरक्षणम्।

तस्मात् प्रयत्नेन शरीरमेव सदा प्रयत्नेन रक्षितव्यम्।।

अर्थात् शरीर धर्म, कर्तव्य और जीवन के सभी सद्कर्मों का प्रधान साधन है। इसलिए शरीर का नित्य संरक्षण और पालन अत्यन्त आवश्यक है।

मनुष्य के जीवन में स्वास्थ्य वह आधार-स्तम्भ है जिस पर परिवार, समाज, सेवा और राष्ट्रकार्य सभी टिके हुए हैं। शरीर स्वस्थ होगा, मन शान्त होगा, तब ही व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन कर सकता है। हमारी भारतीय परम्परा में स्वास्थ्य को केवल बीमारी का न होना नहीं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के संतुलन की अवस्था माना गया है। इसलिए यह आवश्यक है कि स्वास्थ्य केवल व्यक्तिगत चिन्ता न रहे, बल्कि समाज की सामूहिक जिम्मेदारी बने।

1. संतुलित आहार : सादगी में विज्ञान

भारतीय संस्कृति ने हमेशा सादा, ताजा और समय पर भोजन करने पर बल दिया है। प्राकृतिक और स्थानीय भोजन शरीर को सहज रूप से पचाता है और पोषण देता है। अत्यधिक तला-भुना, पैकेट वाला और परिष्कृत भोजन तृप्त तो कर देता है परन्तु शरीर को धीरे-धीरे बीमार करता है। दिन में एक समय हल्का भोजन एवं रात्रि भोजन सूर्यास्त के बाद नहीं करना यह नियम आज भी वैज्ञानिक रूप से सबसे उत्तम माना जाता है।

2. दिनचर्या और व्यायाम : शरीर की असली पूजा

हमारी परम्परा में शरीर को 'देवालय' कहा गया है। प्रतिदिन ३०-४५ मिनट का तेज चलना, प्राणायाम या सूर्य नमस्कार शरीर को सक्रिय रखता है। नियमित व्यायाम रक्तचाप, मधुमेह, हृदयरोग और मोटापे के खतरे को बहुत कम करता है।

योग मन और शरीर दोनों का सन्तुलन बनाता है। यह भारत की अद्वितीय देन है। कहा है-

यत्र योगः तत्र स्वास्थ्यं, यत्र स्वास्थ्यं तत्र सुखम्।

जहाँ योग है वहाँ स्वास्थ्य है; और जहाँ स्वास्थ्य है, वहाँ सुख अपने आप आ जाता है।

3. मानसिक स्वास्थ्य : मन की शान्ति ही जीवन की शक्ति

आज मानसिक तनाव और अवसाद तेजी से बढ़

रहे हैं। नकारात्मक विचार शरीर पर गहरा प्रभाव डालते हैं। प्रतिदिन कुछ समय ध्यान, शान्त श्वास, या जप-ध्यान मन को स्थिर करता है। परिवार से संवाद, आपसी स्नेह और मिल-जुलकर रहने से मन को स्थिरता मिलती है।

भारतीय जीवन मूल्यों में कहा गया है-

'चिन्ता चिता समान' अर्थात् अत्यधिक चिंता मनुष्य की ऊर्जा को नष्ट करती है। मन की शान्ति ही दीर्घ स्वास्थ्य का आधार है। ठीक कहा है-

अप्रसन्ने मनोयाने न सुखं न च स्वास्थ्यं।

जिस व्यक्ति का मन प्रसन्न नहीं होता, उसे न सुख मिलता है न स्वास्थ्य।

वस्तुतः मानसिक शान्ति ही शारीरिक स्वास्थ्य की जननी है।

4. नींद : प्रकृति का अमूल्य उपचार

नींद वह स्वाभाविक चिकित्सा है जिसे प्रकृति ने मनुष्य को उपहार में दिया है। ७-८ घण्टे की गहरी, प्राकृतिक नींद शरीर को नई शक्ति देती है।

देर रात मोबाइल/स्क्रीन उपयोग नींद को खराब करता है और मानसिक तनाव बढ़ाता है। समय पर सोना, सुबह ब्रह्ममुहूर्त में उठना- ये आदतें व्यक्ति को शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से सशक्त करती हैं।

5. आयुर्वेदिक दृष्टि : स्वास्थ्य का समग्र दर्शन

आयुर्वेद कहता है-

'स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम्'

यानी पहले से स्वस्थ व्यक्ति का स्वास्थ्य बनाए रखना ही सर्वोत्तम चिकित्सा है। मौसम और प्रकृति के अनुसार आहार-विहार, पंचमहाभूतों का संतुलन तथा दोषों (वात-पित्त-कफ) का नियंत्रण- ये सब स्वास्थ्य को दीर्घकालीन और स्थायी बनाते हैं।

आज दुनिया holistic health की ओर लौट रही है, जबकि यह ज्ञान हमारे ऋषियों ने हजारों वर्ष पहले दे दिया था।

6. समाज और परिवार : स्वास्थ्य की सामूहिक जिम्मेदारी

एक स्वस्थ समाज वही है जहाँ बुजुर्ग सम्मानित हों, बच्चों को संस्कार मिलें, परिवार में प्रेम और सहयोग हो। भारत ने सदैव परिवार-केन्द्रित जीवन को महत्व दिया है। परिवार मानसिक और भावनात्मक सुरक्षा देता है, जो स्वस्थ जीवन की रीढ़ है। स्वच्छ परिवेश, स्वच्छ जल, पौष्टिक भोजन और सामाजिक सद्भाव- ये समाज के सामूहिक स्वास्थ्य की नींव हैं।

हम निःसन्देह कह सकते हैं यदि शरीर स्वस्थ है, तो व्यक्ति परिवार, समाज, राष्ट्र- हर क्षेत्र में अधिक प्रभावी योगदान दे सकता है।

स्वास्थ्य केवल सरकारी योजनाओं, दवाओं या अस्पतालों का विषय नहीं; यह जीवनशैली, संस्कार, संतुलन और नियमितता का फल है।

हमारा विनम्र सन्देश–

'स्वास्थ्य अपनाएँ, संयम अपनाएँ, और प्रकृति के नियमों के साथ चलें।' यही जीवन का असली धन है, और यही मनुष्य का प्रथम धर्म है।

❑❑❑

साभार- अन्तर्जाल

पाठकों के पास 'सत्यार्थ सौरभ' डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण अनेक बार समय पर नहीं पहुँच पाती है। पाठक न्यास को ही दोषी मानते हैं, जिसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु वास्तविकता है कि यहाँ से प्रत्येक माह की 7 तारीख को पत्रिका प्रेषित कर दी जाती है। पश्चात् सब कुछ डाक विभाग की कृपा पर निर्भर करता है। फिर भी आपसे निवेदन है कि प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

-सम्पादक

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

गतांक से आगे .....

अब तक स्वामी जी की प्रसिद्धि सर्वत्र व्याप्त हो चुकी थी। उनकी विद्वता, उनकी प्रखर वाग्मिता की चर्चा सर्वत्र होने लगी थी। मुम्बई के शिष्टजन उन्हें बार-बार मुम्बई आने के लिए निमंत्रण भेज रहे थे। अतः स्वामी जी जबलपुर होते हुए नासिक पहुँचे। उसके पश्चात् अश्विन सुदी १२ संवत् १९२१ को मुम्बई पहुँच गए। मुम्बई में सेवक लाल जी ने काशी शास्त्रार्थ को छपाकर इतना बाँटा कि सर्वसाधारण को भी महाराज के गुणों का ज्ञान हो गया।

स्वामी जी बालुकेश्वर में ठहरे। मुम्बई में उनके व्याख्यानों का क्रम यह रहा कि वह एक दिन व्याख्यान देते और दूसरे दिन केवल शंका-समाधान करते थे। सहस्त्रों मनुष्य उनके प्रवचनों में आते थे। यहाँ पर वल्लभ सम्प्रदाय वालों का बहुत जोर था वहीं उनके कार्यकलापों से नाराज लोग भी बहुत सारे थे। वे चाहते थे कि स्वामी जी केवल वल्लभ सम्प्रदाय का खण्डन करें ना कि अन्य सम्प्रदायों का। परन्तु वे स्वामी जी से परिचित नहीं थे। वे पन्थों की पोल खोलने में किसी एक का पक्षपात नहीं करते थे। वैष्णव मत में उन दिनों जो प्रथा थी कि गुसाईं को तन-मन-धन सब कुछ अर्पित कर दिया जाए, इसका स्वामी जी ने प्रबल खण्डन किया तो वैष्णवों का मुखिया जीवन गुसाईं नाराज हो गया और उसने स्वामी जी के सेवक बलदेव सिंह को गुप्त रूप से बुलाकर कहा यदि तुम विष देकर दयानन्द को समाप्त कर दो तो हम तुम्हें एक सहस्त्र रुपए देंगे। जीवन जी ने एक सहस्त्र रुपया देने के लिए उसे पत्र भी लिख कर दिया और ₹५ तथा पाँच सेर मिठाई इस समय भेंट की। बलदेव जब लौटकर स्वामी जी के पास आया तो बिना पूछे स्वामी जी सब कुछ जान गए और उन्होंने

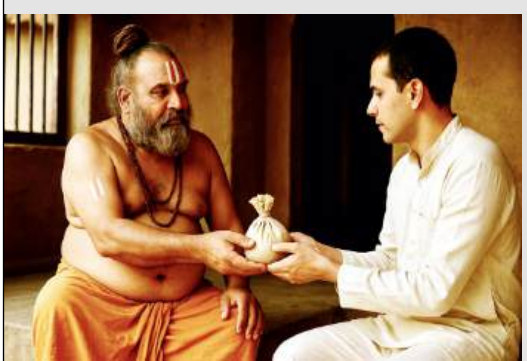

बलदेव से पूछा कि क्या तुम आज गोकुलियों के यहाँ गए थे? बलदेव अवाक रह गया उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं था कि स्वामी जी को यह कैसे पता चला, मैं तो गुप्त रूप से गोसाई से मिलने गया था। उसको कहना पड़ा कि हाँ मैं गया था। स्वामी जी ने फिर कहा अच्छा तो बोलो वहाँ क्या नियत करके आए हो। बलदेव झूठ न बोल सका और उसने सारी वार्ता स्वामी जी के समक्ष निवेदित कर दी। स्वामी जी ने उसे कहा देखो- जिसे परमेश्वर न मारे उसे मारने के लिए कोई भी समर्थ नहीं हो सकता। मुझे न जाने कितने स्थानों पर विष दिया गया परन्तु मेरा अन्त नहीं हुआ। बलदेव महाराज के चरणों में गिर गया और उनसे क्षमा माँगी।

स्वामी जी के जीवन-चरित्र को जब हम आद्योपान्त पढ़ते हैं तो उनको मारने की जितनी चेष्टाएँ की गई थीं उनको सही रूप से गिना भी नहीं जा सकता।

यहाँ भी रात के समय दो हट्टे-कट्टे मनुष्य स्वामी जी का वध करने के लिए मकान में घुस आए। परन्तु स्वामी

जी ने जैसे ही उनको तीव्र दृष्टि से देखा और पूछा कि तुम कौन हो उन कायरों ने भागना ही उचित समझा। जीवन जी गोकुलिए ने भी कुछ बलिष्ठ मनुष्यों को दयानन्द वध के लिए तैयार कर लिया। जब वे स्वामी जी के पीछे-पीछे जाने लगे तो स्वामी जी ने उनसे पूछा क्या तुम मेरा हनन करना चाहते हो? स्वामी जी के मुख की दीप्ति को देखकर उनकी आँखें झुक गयीं वह वहाँ से भाग गए। कहा जाता है कि जीवन जी भी अब मुम्बई में नहीं रुके मद्रास चले गए।

ईमानदारी स्वामी जी के निकट विशेष गुण था। अपने सहायकों से वह यही चाहते थे। मुम्बई में एक सेठ नथमल पोद्दार ने एक दुकान वाले को बोल रखा था कि स्वामी जी की रसोई के लिए उनके सेवक जो भी लेने आए उनको दे दिया करो। ऐसा चलता रहा। एक दिन स्वामी जी ने हिसाब-किताब का निरीक्षण किया तो पता चला जितनी सामग्री आनी चाहिए उससे ७ गुना सामग्री आ चुकी है। जिसको बेचकर के रसोइए पैसे बनाते थे। स्वामी जी ने हाथ की हाथ उनको निकाल दिया।

यहीं पर पण्डित कृष्णराम इच्छाराम जी ने लेखक के तौर पर स्वामी जी के अधीन संस्कार विधि को लिखना प्रारम्भ किया।

पण्डित कृष्णराम इच्छाराम जी वेदान्ती थे। स्वामी जी ने उनको वेदान्ति ध्वान्ति निवारण लिखने में लगा दिया।। इससे उनकी सारी शंकाएँ समाप्त हो गई उनका वेदान्तवाद धुएँ की तरह उड़ गया।

मूर्तिपूजा के सम्बन्ध में एक बात प्रायः कही जाती है कि यह तो भावना की बात है। मानो तो भगवान नहीं तो पत्थर। इस पर चोट करते हुए स्वामी जी ने अपने व्याख्यान में कहा कि भावना करने से लकड़ी का टुकड़ा गन्ना नहीं बन जाता और पत्थर में मिश्री की भावना करने से वह मीठा और खाने योग्य नहीं हो जाता। मृगतृष्णा में मृग जल की बहुत भावना करता है परन्तु उसकी प्यास नहीं बुझती। विश्वास भावना और कल्पना के साथ सत्य का होना आवश्यक है।

❑❑❑

प्रस्तुति- नवनीत आर्य, नवलखा महल, उदयपुर

आर्यवीर दल के प्रधान संचालक के रूप मे मनोनीत वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक श्री नन्दकिशोर जी को अनेकों शुभकामनाएँ..!! आशा है आप के कुशल नेतृत्व मे दल निरन्तर प्रगति करेगा..!!!

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी-बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

G Pay PhonePe

BHIM UPI

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु.51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

समाचार

डॉ.गंगू द्वारा सहयोग

मॉरीशस में आर्य समाज के वरिष्ठतम नेता, आर्य सभा मॉरीशस के पूर्व प्रधान डॉक्टर उदय नारायण जी गंगू को कौन नहीं जानता? गत दिनों में वे महर्षि दयानन्द की कर्मस्थली सत्यार्थ प्रकाश की रचना स्थली पर नवलखा महल सांस्कृतिक केंद्र उदयपुर के रूप में विकसित स्मारक को देखने पधारे। आप सब कुछ देखकर अभिभूत हो गए ।

आप का कहना था कि मैं कोई उद्योगपति तो नहीं हूँ मैं तो प्रोफेसर रहा हूँ और अभी पेंशन मुझे मिल रही है। **परन्तु इसमें से भी उन्होंने एक लाख रुपये का सात्विक अनुदान प्रदान किया।** हम उनके इस अनुदान को आशीर्वाद स्वरुप स्वीकार करते हुए गर्व की अनुभूति कर रहे हैं कि आर्य समाज के ऐसे ऐसे महान् व्यक्तियों द्वारा न्यास के इस नवाचार की भूरि-भूरि प्रशंसा की जा रही है। आभार।

'समिधा' आश्रम के उद्घाटन समारोह

'समिधा' आश्रम के उद्घाटन समारोह में माँ शारदा आर्य समिति, उदयपुर का श्रेष्ठ योगदान, समिधा आश्रम के नवीन परिसर शुभारम्भ एवं स्नेह मिलन कार्यक्रम के अवसर पर माँ शारदा आर्य समिति, उदयपुर की ओर से विशेष सहभागिता दर्ज की गई। कार्यक्रम के अन्तर्गत श्रीमान डॉ. चन्द्रगुप्त सिंह चौहान के जन्मदिवस पर समिति की ओर से उन्हें परम्परागत तलवार भेंट कर सम्मानित किया गया। इसी क्रम में कार्यक्रम में पधारी मेवाड़ महारानी श्रीमती निवृत्ति जी को सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक भेंट की गई। साथ ही बीजेपी के गणमान्य नेता एवं प्रदेशाध्यक्ष श्रीमान् गजपाल जी को भी सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक प्रदान

कर सम्मानित किया गया। समारोह के दौरान नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र; गुलाबबाग, उदयपुर का भी प्रभावी रूप से प्रचार-प्रसार किया गया, जिससे उपस्थित जनसमूह को इस ऐतिहासिक धरोहर की जानकारी प्राप्त हुई। कार्यक्रम का वातावरण सामाजिक सद्भाव, संस्कार, ज्ञान और सेवा की भावना से ओतप्रोत रहा।

वेदोक्त सृष्टि कथा सम्पन्न

दिनांक १४ से १६ नवम्बर २०२५ तक श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, भागलभीम, भीनमाल (राजस्थान) के तत्वावधान में सिरोही नगर के श्री विजयपताका जैन महातीर्थ में त्रिदिवसीय वेदोक्त सृष्टि कथा सोल्लास सम्पन्न हुई। इस कथा के मुख्य प्रवक्ता संस्थान के प्रमुख, वैदिक वैज्ञानिक श्री आचार्य अग्निव्रत तथा अन्य सहयोगी वक्ता थे। संस्थान के प्राचार्य श्री विशाल आर्य, उप-प्राचार्या डॉ. मधुलिका आर्या, संस्थान के न्यासी सेवानिवृत्त प्रोफेसर भौतिकी डॉ. भूपसिंह-भिवानी, न्यासी डॉ. सन्दीप कुमार सिंह प्रोफेसर भौतिकी, ओ.पी. जिन्दल विश्वविद्यालय, सोनीपत, डॉ. आशुतोष कुमार सहा. प्रोफेसर भौतिकी, मुंगेर विश्वविद्यालय आदि थे।

इस कथा में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान विधान सभा में मुख्य सचेतक एवं संस्थान के मानद संरक्षक श्री जोगेश्वर गर्ग सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष तथा विशेष वक्ता थे। पूर्व केन्द्रीय मन्त्री, मुम्बई के पूर्व पुलिस आयुक्त तथा संस्थान के प्रधान संरक्षक डॉ. सत्यपाल सिंह, इसमें विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अमेरिका के वैज्ञानिक डॉ. श्रीनाथ गुप्ता एवं इंजीनियर निश्चल याज्ञिक (ऑनलाइन),

स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी की मेडिकल साइंटिस्ट डॉ. मानसी राणा, नीदरलैण्ड से श्रीमती राधाबिहारी आर्या, वेद सैसोमेकैनिका प्रा. लि. कानपुर के चेयरमेन श्री रवीन्द्रनाथ त्रिपाठी, राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त तथा संस्थान के उपप्रमुख जस्टिस श्री सज्जनसिंह कोठारी, दिल्ली विकास प्राधिकरण की निदेशिका डॉ. अल्का आर्या, अन्तर्राष्ट्रीय नेपाली परिषद् के महासचिव प्रो. राजेश शिवाकोटी, सिक्किम, आदि कुछ वक्ताओं ने मंच पर भावुक हृदय से अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

इस कथा में आचार्य जी तथा अन्य वक्ताओं ने सृष्टि के ऐसे गम्भीर रहस्यों का उद्घाटन किया, जो अन्यत्र दुर्लभ हैं। इसमें संस्थान के संरक्षक कुरुक्षेत्र के संत श्री विदेह योगी ने आध्यात्मिक चिन्तन प्रस्तुत किया, साथ में संस्थान द्वारा किये जा रहे कार्यों को अभूतपूर्व बताया। डॉ. सत्यपाल सिंह आदि अनेक वक्ताओं ने संस्थान के प्राचार्य श्री विशाल आर्य एवं उपप्राचार्या डॉ. मधुलिका आर्या के पुरुषार्थ, लगन एवं वेद विज्ञान हेतु जीवन समर्पण की बहुत सराहना की। कार्यक्रम का कुशल संचालन संस्थान के न्यासी डॉ. मोक्षराज आर्य अजमेर ने किया। सुमेरपुर के पण्डित केशवदेव शर्मा ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किए। यज्ञ के ब्रह्मत्व का निर्वहन डॉ. मधुलिका आर्या ने किया। न्यास-प्रमुख आचार्य अग्निव्रत ने अपने सरकारी सेवा में मित्र रहे श्री राजेन्द्र खराड़ी-खेरवाड़ा, उदयपुर को मेवाड़ अंचल के जनजातीय बन्धुओं को ईसाईकरण एवं इस्लामीकरण से बचाने तथा मांस, मदिरा, मछली, अण्डा व अन्य अभक्ष्य पदार्थों से बचाने हेतु अभियान चलाकर कम से कम एक सौ युवा-युवतियों के यज्ञोपवीत संस्कार का बृहत् कार्यक्रम की तैयारी का उत्तरदायित्व सौंपा।

संस्था मन्त्री डॉ. टी. सी. डामोर ने संस्थान की ओर से सभी आगन्तुओं व कार्यकर्ताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया।

- डॉ. टी. सी. डामोर, मन्त्री, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

हलचल

क्या यह 11/25 का असर है ?

आज भारतीय उच्चतम न्यायालय में एक महत्वपूर्ण मामले में अग्रिम जमानत की सुनवाई हुई। सुनवाई शुरू हो उससे पहले डिफेन्स के वकील ने कहा कि शायद आज की सुबह इस सुनवाई के लिए अच्छी नहीं है। इस पर दो जजों न्यायमूर्ति नाथ और न्यायमूर्ति मेहता की खण्डपीठ में न्यायमूर्ति नाथ ने कहा कि 'दिस इस द बेस्ट मॉर्निंग'। दोनों तरफ के शब्द महत्वपूर्ण है क्योंकि ११ तारीख को लाल किले के पास दिल्ली में आतंकी विस्फोट हुआ और ८ से अधिक लोगों की जान चली गई। इसके दूसरे दिन अर्थात् १२ तारीख को उच्चतम न्यायालय में यह जमानत का मामला प्रस्तुत हुआ तो डिफेन्स के वकील की सोच थी कि कल ही यह घटना घटी है तो न्यायाधीशों के मस्तिष्क पर उसका प्रभाव हो सकता है। दूसरी ओर प्रबल सम्भावना है विशेष रूप से न्यायमूर्ति नाथ की टिप्पणी को देखते हुए कि उन पर इसका असर पड़ा है और देश की सुरक्षा के लिए ऐसे लोगों से कड़ाई से निपटने का मानस भी न्यायाधीशों का बना जो ऐसे सम्भावित हमले के जिम्मेदार हो सकते हैं। इस मामले के मुख्य तथ्य इस प्रकार हैं-

Syed Mamoor Ali (उर्फ ''मामूर भाई'') के ऊपर आरोप हैं कि उन्होंने Unlawful Activities (Prevention) Act, १९६७ (UAPA) के प्रावधानों के अन्तर्गत अपराध कारित किया। ISIS-प्रेरित विचारधारा का प्रचार-प्रसार किया और Ordnance Factory Jabalpur पर हवाई हमला व हथियारों की व्यवस्था करने की साजिश रची। यह सभी गम्भीर प्रकृति के आरोप हैं।

मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने आरोपियों द्वारा प्रस्तुत अग्रिम जमानत की याचिका देश की सुरक्षा के प्रति गंभीर अपराध को देखते हुए खारिज कर दी। आरोपी तब सुप्रीम कोर्ट में गए और १२ नवंबर २०२५ को जिस खण्डपीठ के सामने यह मामला प्रस्तुत हुआ। उस बेंच में जस्टिस "Vikram Nath" और "Sandeep Mehta" शामिल थे।

यहाँ प्रारम्भ में ही बचाव पक्ष के वकील और न्यायाधीश नाथ के बीच में कुछ रोचक टिप्पणी हुईं जिनका सीधा सम्बन्ध ११ नवम्बर को दिल्ली में हुए बम ब्लास्ट से सम्बन्धित था। बचाव पक्ष के वकील समझ रहे थे कि कल ही यह मामला हुआ है तो आज सुनवाई ठीक नहीं क्योंकि न्यायमूर्ति के विचार भी कल के हादसे को देखते हुए कठोर हो सकते हैं। वकील ने कहा-

"Not the best morning to argue this case after the events of yesterday"।

इस पर न्यायमूर्ति ने तुरन्त जवाब दिया-

Best morning to send a message.

इसके पश्चात् न्यायालय ने मामले की गुणावगुण के आधार पर परखकर अग्रिम जमानत की याचिका को रद्द कर दिया। न्यायालय ने यह देखा कि मामला सिर्फ सामान्य आपराधिक गतिविधि का नहीं है बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा-विधानों से जुड़ा है, इसलिए जमानत-प्राथमिकता (bail-consideration) में संकोच होना न्यायसंगत है। न्यायालय ने यह भी टिप्पणी की-

It is admitted fact that inflammatory material was recovered from you.- इस टिप्पणी को जस्टिस नाथ द्वारा कहा गया।

"Even preparation to commit a terror act is an offence under UAPA."- यह टिप्पणी भी न्यायालय द्वारा की गई है।

हम माननीय उच्चतम न्यायालय के इस निर्णय का स्वागत करते हैं। प्रायः देखा गया है कि सुप्रीम कोर्ट जमानत के मामले में काफी नरम रूप अपनाती है और ऐसे मामले जो सीधे-सीधे देश की सुरक्षा से सम्बन्धित होते हैं उनमें भी अपराधियों को छूट देने में संकोच नहीं करती। काश! आज का इस डबल बेंच का निर्णय एक परम्परा बने कि देश की सुरक्षा सर्वोपरि है। अगर इसको, देश की सार्वभौमिकता को तनिक भी खतरा कोई पैदा करता है तो उसे रियायत कदापि नहीं दी जानी चाहिए।

- सम्पादक

श्री गुरुनानक देव जी का वैदिक चिन्तन गोष्ठी सम्पन्न

शुक्रवार १४ नवम्बर २०२५, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'श्री गुरुनानक देव जी का वैदिक चिन्तन' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह करोना काल से ७४७ वाँ वेबीनार था।

वैदिक प्रवक्ता आर्य रविदेव गुप्त ने कहा कि सिख पन्थ के संस्थापक गुरु नानक देव जी ने ५५६ वर्ष पूर्व जन्म लेकर उस समय के समाज में व्याप्त पाखण्ड, छुआछूत, जातिप्रथा और नारियों की दुर्दशा को समाप्त करने के लिए एक अभूतपूर्व क्रान्ति की थी।

उनका सम्पूर्ण चिंतन वेदों की मान्यताओं के अनुरूप ही दिखाई देता है। एक ओंकार सतनाम को ही उन्होंने निराकार मानकर अजन्मा, अनन्त, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान बताया है। समाज सेवा के लिए लंगर प्रथा और संगत-पंगत की आवश्यकता पर बल देकर सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः को ही व्यवहार में लाने का प्रयास किया।

इसी शृंखला में आज से २०० वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समाज की इन सभी कुरीतियों को दूर करने के लिए जन्म लिया और १५० वर्ष पहले आर्य समाज की स्थापना की।

यह दोनों ही संस्थाएँ वेदों की मान्यता पर आधारित होने के कारण एक दूसरे के बहुत निकट प्रतीत होती हैं। वेदान्त से प्रभावित गुरु नानक देव जी महाराज को गत ५ नवम्बर को उनके जन्मदिवस रूपी प्रकाश पर्व पर सम्पूर्ण आर्य जगत् भी उन्हें अपने भावभीनी श्रद्धा सुमन भेंट करता है।

मुख्य अतिथि प्रो. जगबीर सिंह (चांसलर पंजाब विश्वविद्यालय) व दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री सरदार गुरमीत सिंह ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सरदार हरभजन सिंह देयोल (संयोजक राष्ट्रीय सिख संगत दिल्ली) ने की। परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीन आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, कमला हंस, शोभा बत्रा आदि ने मधुर भजन सुनाए।

- प्रवीन आर्य, मीडिया प्रभारी ९७१६६५०८२०

Fit Hai Boss
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 December-2025 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

इसीलिये यह जीव सुख और दुःख से सदा ग्रस्त रहता है। क्योंकि शरीरसहित जीव की सांसारिक प्रसन्नता-अप्रसन्नता की निवृत्ति नहीं होती। और जो शरीररहित मुक्त जीवात्मा ब्रह्म में रहता है, उस को सांसारिक सुख-दुःख का स्पर्श भी नहीं होता, किन्तु सदा आनन्द में रहता है।

सत्यार्थ प्रकाश; नवम समुल्लास पृष्ठ २३९

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर